# सामयिक कुंडलियाँ

दिनेश चन्द्र अवस्थी

दिनेश चन्द्र अवस्थी

# सामयिक कुंडलियाँ

दिनेश चन्द्र अवस्थी

सुलभ प्रकाशन
लखनऊ

पिताश्री
स्व० अवध बिहारी लाल अवस्थी
(दद्दा)
स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
जन्मस्थान
ग्राम व पो० मोतीपुर
जि०– लखीमपुरखीरी, (उ०प्र०)
पुण्यतिथि– १७–१–८६

माताश्री
स्व० विद्यावती देवी
जन्मस्थान
मो० मिश्राना
जि०– लखीमपुरखीरी, (उ०प्र०)
पुण्यतिथि– ७–२–८६

के
चरणों में सादर समर्पित,
जिनके आशीर्वाद से मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ।

दिनेश चन्द्र अवस्थी
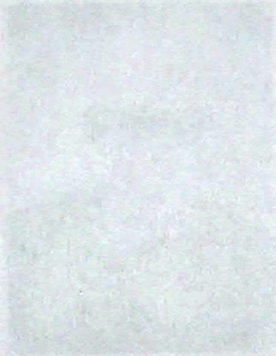
# आशीर्वचन

मुझे श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी विरचित "सामयिक कुंडलियाँ" की पांडुलिपि देखने का सुअवसर मिला। जैसा कि इस कृति के नाम से ही स्पष्ट है इस कृति में कुंडलिया छंद का प्रयोग किया गया है और सभी छंद सामयिक स्थिति, परिस्थिति, वातावरण और परिवेश से सम्बंधित हैं। इसमें कुल मिलाकर 202 छंद संगृहीत हैं।

श्री अवस्थी एक संवेदनशील, भावुक और तत्त्वदर्शी रचनाकार हैं। वे खुली आँखों से अपने आस–पास की वस्तुओं, विषयों एवं घटनाओं को देखते हैं तथा उन पर मनन-चिन्तन कर अपने निजत्व का पुट देते हैं और अत्यन्त प्रभावशाली भाषा में छंदाकार प्रदान करते हैं।

जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं पर उनकी दृष्टि केन्द्रित होती है और सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् के अतिरिक्त अन्य स्थितियाँ उन्हें रास नहीं आतीं। उनमें भारतीय संस्कृति के प्रति अगाध आस्था है तथा इस संस्कृति पर आक्रमण और अतिक्रमण उन्हें बहुत पीड़ित और प्रताड़ित करता है। वह एक सीधे और सच्चे इंसान हैं इसलिए उन्हें सीधा और सच्चा मार्ग ही प्रिय है। मानव-जीवन की असंगतियाँ और विसंगतियाँ उन्हें बहुत झकझोरती हैं, उनका हृदय आंदोलित करती हैं और इसका परिणाम होता है, व्यंग्य के किसी नये कुंडलिया छंद का सृजन। उनके व्यंग्य की धार ऐसी प्रखर तो नहीं है कि पाठक को हत्बुद्ध, स्तब्ध और निष्क्रिय बना दे बल्कि ऐसी मीठी मार है, जो टीसती और कचोटती भी है, साथ ही कुछ सोचने के लिए विवश भी करती है।

उनकी दृष्टि-परिधि अत्यन्त व्यापक है इसीलिए उन्होंने अपने वर्ण्य-विषय परिवार, समाज, राजनीति, कार्यालय, रीति–नीति और चतुर्दिक् व्याप्त एवं विद्यमान स्थितियों, परिस्थितियों, घटनाओं, प्रसंगों, संदर्भों आदि से ग्रहण किए हैं। स्वभावतः उन्होंने इन विषयों से सम्बंधित कुंडलिया छंदों को सम्बंधित शीर्षकों में विभक्त एवं वर्गीकृत भी किया है। कुल मिलाकर ११ शीर्षकों में अपनी रचनायें व्यवस्थित की हैं।

कुंडलिया एक मात्रिक छंद है जिसका रचना-विधि–विधान अन्य मात्रिक

छंदों की अपेक्षा कठिनतर है परन्तु मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता और संतोष हुआ है कि उनके कुंडलिया छंदों में छंद के विधि–विधान का सम्यक् निर्वाह हुआ है। इन छंदों में मुझे ऐसा कोई उल्लेखनीय दोष देखने को नहीं मिला। भाषा, सरस, सरल, सहज, व्यावहारिक और प्रवाहमयी है। अधिकांशतः जनरुचि को देखते हुए अभिधा–अभिव्यंजना शैली का प्रयोग किया है किन्तु कहीं–कहीं लक्षणा और व्यंजना शैलियों का भी प्रयोग अनायास हो गया है।

मुझे यह देखकर आश्चर्य मिश्रित हर्ष होता है कि संख्याओं एवं आँकड़ों की दुनिया में विचरण करने वाले अवस्थी जी को इतना समय कहाँ से मिल जाता है जिसमें वह इतना सब कुछ साहित्य-लेखन भी कर लेते हैं। यह ईश्वर की और माँ वाणी की असीम अनुकम्पा है कि लेखा जैसे शुष्क वातावरण में रमने वाले श्री अवस्थी को ऐसी सुन्दर कारयित्री एवं भावयित्री प्रतिभा का वरदान उन्होंने दिया है। मेरी अपनी धारणा है कि किसी भी अच्छे सृजन के लिए सर्जक को अच्छा मनुष्य भी होना चाहिए और यह बात श्री अवस्थी पर अक्षरशः सही लागू होती है।

उनकी दृष्टि बड़ी उदात्त है जिसका परिचय हमें उनके कई छंदों से प्राप्त होता है उदाहरणार्थ–

*लेखा का वह काम है, जो पत्नी का काम।*
*दिन भर सिर धुनते रहो, नहीं मिले आराम।।*

x x

*पत्नी का जो त्याग, उसे किसने है देखा?*
*पति की सुनती डाँट, कहे फिर भी वह ले–खा।।*

x x

*ऐसा अफसर चाहिए, हो हमदर्द महान।*
*मातहतों के हितों का, रखता हो जो ध्यान।।*

x x

*अंदर से कुछ और हैं, बाहर से कुछ और।*
*ऐसों के व्यवहार पर, करना हरदम गौर।।*

कवि का यह मानना है कि कविता सायास लिखी नहीं जाती वह अवतरित होती है। वह अभ्यास से भी रची नहीं जाती। कवि एवं कविता से

सम्बंधित इन्हीं तथ्यों को अवस्थी जी ने इन पंक्तियों में व्याख्यायित किया है:–

*कविता उतरे स्वयं ही, बिलकुल परी समान।*
*स्वागत उसका मैं करूँ, जैसे प्रिय मेहमान।।*

x x

*उसको ही मानें सुकवि, जिसे न धन का लोभ।*
*पर–उपकार किया करे, नहीं कष्ट में क्षोभ।*

x x

*बहुत कठिन कवि धर्म, तपस्या करनी कवि को।*
*जिसने पकड़ी कलम, सत्य पर चलना उसको।।*

भारत और भारतीयता से उन्हें असीम आत्मीयता है और इसीलिए अपंना श्रद्धाभाव समर्पित करते हैं:–

*महानता करना क्षमा, भारत की पहचान।*
*क्षमा करें धोखा मिले, चाहे हो अपमान।।*

उन्होंने कतिपय ऐसे छंद भी रचे हैं, जिनका स्वर उपदेशात्मक है, किन्तु यह कोरा शाब्दिक वाक्जाल नहीं है प्रत्युत् उनमें उनकी अनुभूति रची-बसी है, जिससे पाठक पर भरपूर प्रभाव पड़ता है–

*मद, मत्सर, लालच विकट, काम, क्रोध औं मोह।*
*द्वेष, घृणा, संदेह से, होगा केवल द्रोह।।*

x x

*सुंदरता को देख लें, रहिए उससे दूर।*
*रूप-भोग में सुख नहीं, बात सही भरपूर।।*

श्री अवस्थी जी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और ईश्वर पर अटूट विश्वास है इसीलिए अपने समस्त कर्माकर्म ईश्वर को ही समर्पित कर देते हैं और कहने लगते हैं :–
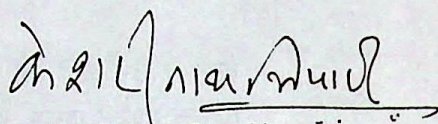
*ईश्वर को जो मानते, करते नहीं अनीति।*
*घर, दफ्तर, व्यापार में, चलें सही ही नीति।।*

x x

*मेरे भगवन हो कहाँ, मिलता मुझे न चैन।*
*बाट तुम्हारी जोहता, खोले मूँदे नैन।।*

इस प्रकार श्री अवस्थी जी अपने सृजन एवं व्यवहार से सबका मन मोह लेते हैं। मैं उन्हें आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी यह रचनाधर्मिता निरन्तर विकसित और परिष्कृत हो तथा वे अक्षय कीर्ति के भागी बने। इस कृति के प्रकाशन पर उन्हें साधुवाद एवं हार्दिक बधाई।

(केशरी नाथ त्रिपाठी)
अध्यक्ष, विधान सभा
उ०प्र० लखनऊ

# पुरोवाक्

श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी प्रणीत यह स्फुट काव्य यों तो मुक्तक काव्य की कोटि में ही रखा जाना चाहिये, किन्तु उपशीर्षकों में विभाजित इस कृति में उन शीर्षकों से सम्बन्धित कथ्यगत तारतम्य और विचार–शृंखला का निर्वाह हुआ है। इस दृष्टि से मुक्तक होते हुए भी इसमें प्रबन्धत्व का निर्वाह है। पारिवारिक उपशीर्षक में संग्रहीत छन्द परिवार और पत्नी को केन्द्र में रख कर ही लिखे गये हैं। इस शीर्षक के अन्तर्गत पति–पत्नी की प्रेम–कलह, घर–गृहस्थी का संचालन मनोरंजन, पत्नी का उदार–अनुदार दृष्टिकोण, प्रेम और उपदेश, सच–झूठ, ससुराल के साथ ही साथ माता–पिता आदि अन्यान्य पारिवारिक संबंधों को हास्य–व्यंग्य की फुलझड़ियों के साथ सजाया गया है।

इसी तरह 'सामाजिक' उपशीर्षक के अन्तर्गत वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक जीवन के यथार्थ को अंकित किया गया है। सज्जनों और दुर्जनों, साधारण और असाधारण, अच्छे और बुरे व्यक्तियों के घात–प्रतिघात को रचनाकार ने बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। नायकों और खलनायकों, सदाचारियों और दुराचारियों, ईमानदारों और पतितों के सह–संबंधों से समाज निर्मित है और गतिमान भी।

'राजनीतिक' उपशीर्षक में रखी गयी कविताएँ भारतीय राजनीति के वर्तमान परिदृश्य को रेखांकित करती हैं। चुनाव पर माफियाओं का कब्जा, घूस–घोटाले और अत्याचार, नेताओं के झूठे वायदे आदि ऐसे शुद्ध तथ्य हैं जो रचनाकार ने चित्रात्मक शैली में प्रस्तुत किये हैं।

'कार्यालयी' उपशीर्षक के अन्तर्गत संकलित छन्दों में कार्यालयों में व्याप्त लाल फीताशाही, कामचोरी, उत्तरदायित्व का अभाव आदि अन्यान्य तथ्यों का रेखांकन किया गया है। यही नहीं दफ्तर में नौकरी प्राप्त करने का जुगाड़, अफसरों की जी–हुजूरी, कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों की लाचारी आदि अन्यान्य विषयों पर कवि ने कलम चलायी है। इसी तरह 'भ्रष्टाचार' शीर्षक के अन्तर्गत, रिश्वत का व्यंग्यात्मक बखान, बाबुओं का फायल दबाना, फायलों में गलत नोट लगाकर अर्थ का अनर्थ करना, बाबुओं और अफसरों द्वारा की गयी विविध प्रकार की

लूटखसोट और चोरी का उल्लेख भारतीय दफ्तरों की बखूबी तस्वीर प्रस्तुत करता है।

कवि ने अवसरवादी और मक्खनबाजी राजनीति का भरपूर भण्डाफोड़ किया है। अवसरवादी व्यक्ति गिरगिट की तरह रंग बदलता है। दिखायी कुछ देता है और होता कुछ और है। अवसरवादी अथवा खुदगर्ज ऐसे 'लगुए–भगुए' होते हैं जो अपने अधिकारी को प्रसन्न करने के लिए नाना प्रकार के दाँवपेंच लगाते हैं और काम निकलने पर मक्कार और दुमुँहे साबित होते हैं। सही मक्कार के स्वरूप को रेखांकित करते हुए कवि कहता है–

*सुख से जीना चाहते, सीखो देना दाँव।*
*फिर कोई चिन्ता नहीं, शहर बसो या गाँव।।*
*शहर बसो या गाँव, बोलना मीठा सबसे।*
*हो जाये विश्वास, कान काटो फिर तब से।।*
*कलियुग का है समय, मिले इसमें दुख ही दुख।*
*मक्कारी लो सीख, चाहते यदि पाना सुख।।*

'हास्य–व्यंग्य' शीर्षकान्तर्गत संकलित कविताओं में कहीं–कहीं मीठी–मजाक का पुट है और कहीं कठोर व्यंग्य का। मूँछें, सुन्दरियों का नमस्कार, पत्नी और प्रेयसी, पत्नी और टी०वी०, पब्लिक और प्रेमिका आदि विविध कविताओं के माध्यम से रचनाकार ने पाठकों के मनोरंजन का अच्छा उपक्रम किया है। उदाहरण के लिए 'शादी' नामक कविता में बौनी पत्नी से शादी होने से दुःख और सुख का बड़ा मजेदार वर्णन है, यथा–

*शादी कन्या से हुई, जो छोटी दो फीट।*
*सब सम्बन्धी देख के, माथा लेते पीट।।*
*माथा लेते पीट, भेद कुछ समझ न आया।*
*बहुत पूछने पर, चुपके से राज़ बताया।।*
*नीची रखकर नज़र, बात करने का आदी।*
*सुविधा होगी बहुत, इसी से कर ली शादी।।*

वस्तुतः बौनी लड़की से शादी करने का यह रहस्योद्घाटन रेखांकित करने योग्य है। इसी प्रकार 'पब्लिक और प्रेमिका' शीर्षक कविता में प्रेमी के संदर्भ में बेवफा प्रेमिका और राजनेता के संदर्भ में पब्लिक के व्यवहार का बड़ा

ही हास्यपरक किन्तु सटीक प्रस्तुतीकरण किया गया है। यहाँ इस कविता को उद्घृत करना आवश्यक प्रतीत होता है–

*पब्लिक हो या प्रेमिका, दोनों एक समान।*
*रीझ जायँ किस पर, कहाँ, यह जानें भगवान।।*
*यह जानें भगवान, देखते सब हैं नखरे।*
*निकल जाय जब काम, न दिखते उनके चेहरे।।*
*कभी बिठायें शीश, कभी देती हैं फ्री–किक।*
*रखना पूरा ध्यान, प्रेमिका हो या पब्लिक।।*

'कवि और कविता' शीर्षक के अन्तर्गत रचनाकार ने कवि–कर्म को बहुत उदात्त माना है। उसकी दृष्टि में कवि–कर्म एक सत्योपासना और तपस्या है। जुल्मों और अत्याचार से अनवरत संघर्ष है। कविता का जन्म अनायास ही होता है यथा–

*कविता उतरे स्वयं ही, बिलकुल परी समान।*
*स्वागत उसका मैं करूँ, जैसे प्रिय मेहमान।।*

स्पष्ट है कि रचनाकार की मान्यता है कि कविता स्वयं जन्म लेती है। यथा–

*जैसे प्रिय मेहमान, रात में अक्सर आती।*
*करती मुझको प्यार, खूब जब अवसर पाती।।*
*अरुणोदय सा हृदय, उतरती कविता–सविता।*
*सब कुछ देती मुझे, शान्ति, यश, प्रभुता कविता।।*

इस तरह अवस्थी जी ने अनायास ही काव्य के दैवी उत्प्रेरणा सिद्धान्त को प्रस्तुत कर दिया है। गोस्वामी जी ने भी लिखा है–

*हृदय सिंधु मति सीप समाना।*
*स्वाति सारदा कहहिं सुजाना।।*
*जौं बरषइ बर बारि बिचारू।*
*होहिं कबित मुकुतामनि चारू।।*

नीति-परक कुंडलियों में कहीं मध्ययुगीन सन्तों की मान्यताओं का निरूपण है तो कहीं लोकनीति का वर्णन है। मध्ययुगीन सन्तों ने स्त्री-सौन्दर्य और भोग

की कटु निन्दा की है। सन्त दादू लिखते हैं–

*नारी कहौं कि नाहरि, नख--शिख सौं यह खाय।*

अर्थात् नारी पुरुष का भक्षण करती है, उसका विनाश करती है। स्वयं गोस्वामी जी ने युवती को दुःखों का भण्डार कहा है।

*'प्रमदा सब दुःख खानि'*

ऐसा लगता है कि समीक्ष्य रचनाकार भी कुछ इसी प्रकार की मनोवृत्ति का संपोषक है। यहाँ निम्नांकित पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

**सुन्दरता**

*सुन्दरता को देख लें, रहिए उससे दूर।*
*रूप-भोग में सुख नहीं, बात सही भरपूर।।*
*बात सही भरपूर, तत्त्व उपलब्ध न होगा।*
*नहीं मिलेगी तुष्टि, अगर अपनत्व न होगा।।*
*है यह माया जाल, रूप सबको है छलता।*
*जब सुन्दर हो दृष्टि, दिखे मन की सुन्दरता।।*

नीति के साथ ही साथ उपदेश और अध्यात्म सम्बन्धी छन्द भी इस संग्रह में संकलित किये गये हैं। अंग्रेजी के महाकवि वर्ड्सवर्थ काव्य का प्रयोजन शिक्षा मानते थे। ऐसी शिक्षा जो दीन–दुखियों के आँसू पोंछे, संतप्त मानवता को शीतलता प्रदान करे। अवस्थी जी ने दिन–प्रतिदिन के जीवन-संदर्भों से इसे जोड़कर अनेक उपदेशात्मक छंद लिखे हैं जैसे, आँसू, कर्त्तव्य, पढ़ाई, सीख, कर्मोपासना आदि। इन रचनाओं में कवि ने लोकसंचित अनुभवों को काव्यात्मक तरीके से प्रस्तुत किया है। वस्तुतः कविता का लक्ष्य कोरा उपदेश नहीं, सरस उपदेश है। अवस्थी जी ने उपदेश और शिक्षा को रससिक्त करके प्रस्तुत करने की कोशिश की है। प्रस्तुत संकलन के 'आध्यात्मिक' शीर्षक के अन्तर्गत रखी हुई कविताएँ किसी विशिष्ट दर्शन का प्रतिपादन नहीं करतीं वरन् कवि की धार्मिक भावनाओं को रेखांकित करती हैं। 'मेरे भगवान' और 'प्रार्थना' कविताएँ इस तथ्य को उजागर करती हैं। 'प्रार्थना' कविता की पंक्तियाँ भावुक कवि की मनोदशा को भली भाँति रेखांकित करती हैं–

*इतना दुख मत दीजिए, जिससे जायें टूट।*
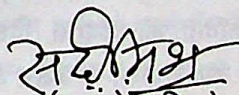
*हम निर्बल असहाय हैं, हमें चाहिए छूट।।*
*हमें चाहिए छूट, युक्ति से मुक्ति न मिलती।*
*बिना ईश की कृपा, भक्ति की कली न खिलती।।*
*बड़ी समस्या कठिन, भला कैसा हो अपना।*
*प्रभु दे दो सद्बुद्धि, माँगता मैं बस इतना।।*

कुल मिलाकर अवस्थी जी की कुंडलियाँ विषय–वैविध्य से परिपूर्ण हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विविध विषयों पर समय–समय पर काव्य–दशा में उतरते हुए उन्होंने ये कुंडलियाँ लिखी हैं। अन्यान्य जीवनानुभवों और लोकानुभवों का सरस ढंग से प्रस्तुतीकरण इनमें हुआ है। ये लोकाचरण की दृष्टि से अत्यन्त सारगर्भित और जीवनोपयोगी हैं।

शिल्प की दृष्टि से विचार करें, तो यह कहा जा सकता है कि भाषा, प्रांजल और सटीक है। तुक का निर्वाह बराबर मिलता है। गति, यति और लय छन्द के प्रमुख तत्त्व होते हैं जो इन कुंडलियों में विद्यमान हैं। यों तो इस क्षेत्र में कविराय गिरधर शीर्षस्थ कवि माने जाते हैं। उनकी कुंडलियाँ भी लोक जीवन के नाना पक्षों को स्पर्श करने वाली हैं। उन्हें पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि यह तो मेरे ही जीवन की सत्य कथा है। यहाँ पर मेरा उद्देश्य अवस्थी जी की कुंडलियों पर तुलनात्मक दृष्टि से विचार करना नहीं है वरन् अनुभूति के उस वैशिष्ट्य को रेखांकित करना है जो अवस्थी जी की कुंडलियों में भी अन्तर्भूत हैं।

कवि का यह प्रयास सराहनीय है। मेरी कामना है और ईश्वर से प्रार्थना भी कि उनके कवि का उत्तरोत्तर विकास और परिष्कार हो। आशा है सुधी पाठक इस संकलन को पढ़ कर काव्यानंद प्राप्त करेंगे और इस काव्य–संकलन का मुक्त हृदय से स्वागत करेंगे। अस्तु।

सत्यदेव मिश्र
(सत्यदेव मिश्र)
रीडर, हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

18, रीडर्स फ्लैट्स
फैजाबाद रोड,
विश्वविद्यालय परिसर
लखनऊ

# दिनेश की ये कुंडलियाँ

कुंडलिया एक मात्रिक विषम छन्द है। इसमें छः चरण होते हैं। पहले दो चरण दोहे के होते हैं और बाद के चार चरण रोला छन्द के। दोहा एक मात्रिक अर्ध सम छन्द होता है, जिसके विषम चरणों में १३–१३ मात्राएँ और सम चरणों में ११–११ मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण के अन्त में लघु होता है। रोला एक मात्रिक सम छन्द होता है, जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं तथा ११, १३ मात्राओं पर सामान्यतः यति होती है।

छन्द शब्द की व्युत्पत्ति छद् धातु से हुई है, जिसका अर्थ है आवृत करना, आच्छादित करना, रक्षा करना। यास्क ने निघण्टु में इसका अर्थ 'प्रसन्न करना' भी दिया है। इस प्रकार छन्द अपने पाँचों संघटक तत्त्वों– चरण, वर्ण, मात्रा, गण एवं यति और गति से पूर्णतया आवृत होता है तथा वह सहृदय पाठक और श्रोता को प्रसन्न और आनन्दित भी करता है।

अभिव्यंजना शैली की दृष्टि से साहित्य के मोटे तौर पर दो भेद हैं– गद्य और पद्य। भाषा के स्वाभाविक क्रम में बोल–चाल और विचार–विनिमय के लिए जिस भाषा–रूप का आश्रय लिया जाता है, उसे गद्य कहते हैं। इसके विपरीत क्रमबद्ध ताल, लय, वर्णों और मात्राओं का विशेष ध्यान रख कर जिस अभिव्यंजना–शैली का सहारा लिया जाता है, उसे पद्य की संज्ञा दी गई है। वास्तव में गद्य और पद्य के बीच विभाजक रेखा खींचने वाला तत्त्व छन्द ही होता है।

इधर विगत चार–पाँच दशकों से पाश्चात्य काव्य–शैली के अनुकरण में छन्दमुक्त कविता को विशेष प्रश्रय और महत्त्व हिन्दी कवियों ने दिया तथा छन्दबद्ध कविता को व्यपगत, पिछड़ी, असामयिक, पुराने ज़माने की, संश्लिष्ट जीवन को व्यक्त करने में अक्षम और न जाने क्या–क्या कह कर अनादृत एवं महत्त्वहीन बनाने के भरसक प्रयत्न किए, जिसका आत्मघाती दुष्परिणाम यह हुआ कि जनता ने कविता को एक प्रकार से नकार ही दिया है। छन्दमुक्त कविता के संग्रह उनके रचयिताओं, प्रकाशकों या पुस्तकालयों की अल्मारियों की शोभा बनते रहे, जनता में आदृत–समादृत नहीं हुए।

किन्तु यह एक उत्साहप्रद और प्रसन्नता की बात है कि छन्दमुक्त कविता का उफान शान्त होने लगा है, कविता के जनता से कट जाने का क्या हश्र होता है, उसकी क्या परिणति होती है, यह बात नयी कविता के कट्टर समर्थकों की भी समझ में आने लगी है और पक्षधरता के बड़े–बड़े दावों, दलीलों, तर्कों का प्रबल स्वर मन्द होने लगा है। रचनाकार पुनः छन्दोबद्ध कविता के सृजन की ओर मुड़ने लगे हैं। यह एक शुभ संकेत है कवि और कविता दोनों के लिए ही। वस्तुतः कविता अब तक जीवित रही है जनता की गुनगुनाहट में ही और आगे भी जीवित रहेगी, इसी गुण विशेष के कारण, साथ ही उसकी आशाओं–आकांक्षाओं की सम्पूर्ति होने से ही।

दिनेश चन्द्र अवस्थी जैसे अनेक कवियों को कविता की इस स्थिति का पूर्वाभास हो गया था और उन्हें इस बात का पूरा विश्वास था कि छन्दबद्ध कविता को ही जनता में महत्त्व मिलना है, इसलिए वे अपना लक्ष्य निर्धारित कर छन्दोबद्ध कविता के प्रणयन में ही निरत रहे। अपने लक्ष्य–सिद्धि की दिशा में सधे कदमों से निरन्तर आगे बढ़ते रहे है।

श्री अवस्थी एक संवेदनशील रचनाकार हैं। उनकी दृष्टि बड़ी पैनी है। वह आस–पास घटित घटनाओं, सामाजिक व्यवहारों, वैयक्तिक संकीर्णताओं, घर–बाहर की विसंगतियों–विद्रूपताओं और परिवेशगत विषमताओं को भली भाँति देखते समझते हैं, उन पर मनन–चिन्तन करते है, आधारभूत कारणों की तह तक जाते हैं और वहीं से पैनी होने लगती है, उनके हास्य–व्यंग्य की धार तथा कुंडलिया के माध्यम से आरम्भ हो जाती है, उसकी मार, जो न केवल पाठक या श्रोता को अपने साथ–साथ ले चलती है, उसे हँसाती–गुदगुदाती है, सार्थक मनोरंजन करती है बल्कि उसे तिलमिला देती है और सही दिशा में सोचने और कुछ उपाय करने के लिए उकसाती और प्रेरित भी करती है।

अवस्थी जी ने कुंडलियों के माध्यम से अपने अनुभवों–अनुभूतियों को वाणी दी है। इनके इन छन्दों का मुझे भी अनुशीलन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है और इनके रचना–वैविध्य और रचना–सामर्थ्य ने मुझे उनके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त किया है। उनकी सूक्ष्म–निरीक्षण–शक्ति ने अनेक अनछुए प्रसंगों और सन्दर्भों का संस्पर्श किया है तथा समाज और परिवेश का पारदर्शी चित्र उकेरा है। अब यह आपकी जिम्मेदारी है कि इसमें अपने को तलाशिये, अपने को ढूँढ़िये, अपने को पहचान कर आत्मालोचन, आत्म–मथन कीजिए और

अपना मार्ग निर्धारित कीजिए, अपना गंतव्य सोचिए, अपना कर्तव्य–पथ सुनिश्चितः कीजिए। कवि ने वस्तु–सत्य के दोनों पक्ष उजागर कर दिए हैं, जो रुचे उसके पक्षधर बनिए।

अवस्थी जी की 'सामयिक कुंडलियाँ' कृति में छन्द एक है, शैली एक है लेकिन वर्ण्य–विषय एक नहीं है। इसकी परिधि में परिवार, समाज, कार्यालय, भ्रष्टाचार, राजनीति, कवि–कविता, नीति, उपदेश, अध्यात्म सब कुछ आ जाता है। इन विषय–क्षेत्रों के विभिन्न फलक हैं, विविध रंग हैं, भिन्न–भिन्न रूपाकृतियाँ हैं, भाव–भंगिमाएँ हैं, प्रभाव और परिणतियाँ हैं। आप पढ़िए, गुनिए। मेरा दावा है, आप ऊबेंगे नहीं। आप हँसेंगे, मुस्कराएँगे। कहीं गम्भीर होंगे, कहीं उनमें स्वयं अपने को खड़ा पाएँगे।

इनकी रचनाओं के सम्बन्ध में अन्त में मुझे यही कहना है कि इनमें एक सही इन्सान की सोच–सरोकार है, निश्छल और निर्वैयक्तिक दृष्टि का संज्ञापन है, भारतीय मनीषा का रूपायन है तथा ऐसा वह सब कुछ है, जो आपको भटकाएगा नहीं, सन्मार्ग पर ही ले जाएगा।

मैं श्री दिनेश चन्द्र अवस्थी की इस नव्य कृति 'सामयिक कुंडलियाँ' का सहर्ष स्वागत करता हूँ और उनकी सतत साधना की सफलता की कामना करता हूँ।

रामाश्रय सविता

558/28 घ, सुन्दरनगर
आलमबाग,
लखनऊ–226005

(डॉ० रामाश्रय सविता)

# विनम्र निवेदन

ईश्वर की कृपा, माता–पिता एवं गुरु के आशीर्वाद से मैं जो कुछ भी लिख सका हूँ, वह 'सामयिक कुंडलियाँ' के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। मैंने कविता लिखने में विशेष प्रयत्न कभी नहीं किया वरन् जो कुछ भी घर, कार्यालय, समाज में एवं अपने आस–पास देखा, अनुभव किया, उससे ही प्रभावित एवं प्रेरित होकर अपने विचार प्रकट कर दिए।
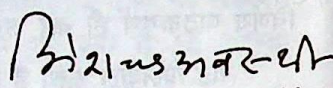
मुझे कुंडलिया छंद शुरू से प्रिय रहा है। इसमें नीति, राजनीति, हास्य–व्यंग्य आदि भावों को भली–प्रकार व्यक्त किया जा सकता है। इससे पूर्व 'दिनेश की कुण्डलियाँ' नाम से एक संग्रह वर्ष 1996 में प्रकाशित हो चुका है। इस प्रकार मैं लगभग चार वर्षों से इस पर कार्य कर रहा हूँ, कितना कर सका हूँ, इसका निर्णय पाठकगण ही कर सकेंगे।

यह बिलकुल सत्य है कि बिना गुरु के ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो पाती है। यह भी कहा जाता है कि मैल से मैल साफ नहीं हो सकता। मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे डॉ० रामाश्रय सविता जैसे गुरु की प्राप्ति बिना प्रयत्न के हो गई। वे न केवल श्रेष्ठ कवि एवं साहित्यकार हैं, वे साधु भी हैं। उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय में मुझे पढ़ाया है एवं काव्य-क्षेत्र में मुझे मार्गदर्शन प्रदान किया है। अवकाश के दिनों में मैं काफी समय तक कई–कई घंटे उनके साथ रहा, विचार–विमर्श किया और उन्होंने सभी छंदों को देखा और उनमें सुधार किया। श्री शिव भजन 'कमलेश' ने भी, जो एक अच्छे कवि हैं, पांडुलिपि देखी है। उन्होंने चार–छः स्थानों पर सुधार का परामर्श दिया। पुस्तक का नाम 'सामयिक कुंडलियाँ' उन्होंने ही दिया है। मैं उनका भी बहुत आभारी हूँ। मैं लखनऊ विश्वविद्यालय, हिन्दी विभाग का शोध छात्र भी हूँ। मेरे निर्देशक डॉ० सत्यदेव मिश्र, रीडर भी मुझे मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त माननीय अध्यक्ष, विधान सभा, परम आदरणीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी का भी मुझे आशीर्वाद मिलता रहता है। वे काव्य क्षेत्र एवं अन्य मामलों में मेरे प्रेरणा के स्रोत हैं। प्रतिष्ठा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था, आलमबाग, लखनऊ से सम्पर्क के कारण मुझे वहाँ से सीखने का अवसर मिला। इसके अतिरिक्त विधान भवन स्थित उ०प्र० सचिवालय हिन्दी परिषद एवं नवगठित राज्य कर्मचारी साहित्य संस्थान के

तत्त्वावधान में फरवरी 1996 से होनी वाली मासिक गोष्ठियों में सचिवालय एवं सचिवालय के बाहर से आने वाले अनेक कवियों से मुझे सीखने का अवसर मिलता रहता है। इन तीनों संस्थाओं एवं इनसे जुड़े साहित्यकारों का मैं आभारी हूँ। आशा है कि आगे भी सभी लोग मुझे मार्गदर्शन एवं प्रेरणा देते रहेंगे।

चूँकि कविता संग्रह में सामयिक विषयों,परिस्थितियों एवं वातावरण को ही विषय बनाया गया है अतः पुस्तक का नाम 'सामयिक कुंडलियाँ' रखा गया है परन्तु यह भी सम्भव है कि इसमें से बहुत से छंद लम्बे समय तक सामयिक सिद्ध हों। यह भी हो सकता है कि इसमें कही गई बातों से आप भी सहमत हों और वह आपकी अपनी ही बात लगे। पुस्तक में यदि कमियाँ रह गई हों तो पाठकगण कृपया क्षमा करते हुए इंगित करने की कृपा करें जिससे कि भविष्य में यथा समय उनमें सुधार किया जा सके।

दिनेश चन्द्र अवस्थी

(दिनेश चन्द्र अवस्थी)

405/238
चौपटियाँ रोड,
लखनऊ

# सामयिक कुंडलियाँ

## सरस्वती–वंदना

नमन करूँ माँ शारदे, जिससे हो कल्याण।
कवितायें ऐसी रचूँ , फूँकें सबमें प्राण।।
फूँकें सबमें प्राण, करें प्रेरित जन–जन को।
पैदा कर दें क्रांति, सुधारें सब तन–मन को।।
जन्मे सभी समान, भेद–भाव का हो शमन।
बने स्वर्ग–सा देश, सभी करें इसको नमन।।

## महावीर–वंदना

जीवन के आदर्श तुम, महावीर हनुमान।
मैं तुमसे हूँ माँगता, भक्ति–शक्ति–शुचि ज्ञान।।
भक्ति–शक्ति–शुचि ज्ञान, सदा मैं तुमको ध्याऊँ।
चरण–कमल में लीन, तुम्हारे ही गुन गाऊँ।
भक्ति–भाव–सद्भाव, भरो मन में जन–जन के।
भूले कोई नहीं, मूल्य शाश्वत जीवन के।।

# पारिवारिक

## झगड़ा–रस

झगड़ा--रस में है मज़ा, पति--पत्नी के बीच।
प्रेम बेल सूखे नहीं, सुबह–शाम लो सींच।।
सुबह--शाम लो सींच, कीट मीठे में पड़ते।
रुकता तभी अचार, तेल कड़ुए में रखते।।
भूले थे विद्वान, कि यह रस भी है तगड़ा।
प्रेम बढ़े दिन–रात, प्यार से करना झगड़ा।।

## मनोरंजन

झगड़ा पति–पत्नी करें, रहता चित्त प्रसन्न।
झक–झक नित करते रहो, बने रहोगे टन्न।।
बने रहोगे टन्न, मोद के साधन महँगे।
होती सुस्ती दूर, रहोगे चौकस चंगे।।
साधन मन बहलाव, न इससे कोई तगड़ा।
दिन होता बेकार, न हो पति–पत्नी झगड़ा।

# पत्नी और घर

घर में एकाकी हुए, भोगे कितने कष्ट।
इन कष्टों के साथ में, सुख–आनन्द विनष्ट।।
सुख–आनन्द विनष्ट, अतिथि कुण्डी खटकाये।
बाथरूम में घुसे, फोन की घंटी आये।।
खाने की तकलीफ़, झमेला रहता सिर पर।
कौन सफाई करे, सदा गंदा रहता घर।।

# पत्नी का महत्त्व

पत्नी है अर्द्धांगिनी, बिन पत्नी सब सून।
पत्नी बिना न मन लगे, घर या देहरादून।।
घर या देहरादून, प्यार को बढ़ा लीजिए।
पत्नी को कुछ दिवस, कहीं अन्यत्र भेजिए।।
भूखा होगा पेट, याद आयेगी करनी।
पता चलेगा तभी, काम की कितनी पत्नी।।

## वेतन

पत्नी अच्छी है वही, जो वेतन ले छीन।
दस–दस रुपये रोज़ दे, पति को कर दे हीन।।
पति को कर दे हीन, नहीं आदतें बिगड़तीं।
बार और होटली, महफ़िलें कभी न जमतीं।।
पे पर तो हक़ सभी का, पे नहीं सब अपनी।
उसको सब दो सौंप, क्योंकि गृहलक्ष्मी पत्नी।।

## नमकीन पत्नी

नमक डालना दाल में, पत्नी जाती भूल।
हम सबका हित देखना, इसके पीछे मूल।।
इसके पीछे मूल, चाय फीकी बनवाती।
शुगर रोग से मुक्त, रहेगी उनकी थाती।।
यही भावना मुख्य, उचित क्या करना बकझक?।
पत्नी खड़ी समक्ष, समझ लो दाल में नमक।।

## अच्छी पत्नी

पत्नी जो नहिं मानती, अपने पति की बात।
उसके बच्चे ही उसे, बतलाते औक़ात।।
बतलाते औक़ात, मानते बात न कोई।
ख़ुद ही जिम्मेदार, प्रतिष्ठा अपनी खोई।।
तुम पर घर का बोझ, सुधारो आदत अपनी।
पति का कहना मान, कहाओ अच्छी पत्नी।।

## कठिन जीना कितना

कितना मुश्किल झेलना, पत्नी यदि हो सख़्त।
बात निराशाजनक है, लड़के हों कमबख़्त।।
लड़के हों कमबख़्त, शांति तब कभी न मिलती।
कितना करें प्रयास, शान पर मिट्‌टी पड़ती।।
पत्नी का कर्त्तव्य, रखे मृदु - भाषी रसना।
घर में यदि विद्रोह, कठिन जीना है कितना?।।

## फूल और .फ़ूल

पत्नी से मैंने कहा, तुम हो सुन्दर फूल।
मैंने तुमसे प्रीति की, मैं भी कितना .फ़ूल।।
मैं भी कितना .फ़ूल लगा मैं पीछे रहता।
सुबह–शाम हो रात, झाड़ मैं कितनी सहता।।
मैं माया का रूप, लुभाना आदत अपनी।
रहती हूँ नित तनी, अतः कहलाऊँ पत्नी।।

## पति का स्वाँग

हाथ जोड़ भगवान के, मौत रहा था माँग।
पत्नी से झगड़ा हुआ, पति करता है स्वाँग।।
पति करता है स्वाँग, पड़ा पत्नी पर भारी।
पत्नी माँगे मौत, गई उसकी मति मारी।।
पति ने अर्ज़ी फेर, कहा समय पहचान के।
पत्नी को दो मौत, हाथ जोड़ भगवान के।।

## प्रेम–पत्र

चिट्ठी पत्नी को लिखी, प्रेयसि को भी एक ।
पते लिफ़ाफों पर लिखे, दिये बाक्स में फेंक।।
दिये बाक्स में फेंक, पते उल्टे लिख डाले।
भारी दुर्गति हुई, मुसीबत बैठे–ठाले।।
करना जिससे प्यार, न लेना उससे छुट्टी।
करना उससे ब्याह, उसे ही लिखना चिट्ठी।।

## बचाओ अपना घर

घर टूटा–फूटा भले, कभी न हो तुम खिन्न।
स्वच्छ उसे रखकर सदा, मिलकर रहो प्रसन्न।।
मिलकर रहो प्रसन्न, आश्रम बहुत यह अच्छा।
करें सभी कर्त्तव्य, वृद्ध हो चाहे बच्चा।।
युग यह है व्यापार, दुकानें क्यों घर भीतर?।
बने न घर दूकान, बचा लो तुम अपना घर।।

## औरत की ताक़त

औरत नहीं अशक्त है, वह होती सहज़ोर।
पति, बच्चों के मोहवश, हो जाती कमज़ोर।।
हो जाती कमज़ोर, दिखाई देती दुर्बल।
सहनशील अत्यंत, दया–ममता का संबल।।
औरत जहाँ प्रसन्न, वहीं टिकती है दौलत।।
करो हमेशा मान, जगत–जननी है औरत।।

## सच और झूठ

सुबह–सुबह कुछ कहा था, बदले आई शाम।
पद–पैसा सब पास है, अन्दर दुर्बल चाम।।
अन्दर दुर्बल चाम, न अच्छी चर्चा होती।
इज़्ज़त होती ख़त्म, कमाई रोती धोती।।
सच है सबसे बड़ा, इसे निभाना हर तरह।
बिगड़ जाय परिवार, बोलते झूठ जो सुबह।।

## श्वसुर बिचारा

श्वसुर बिचारा गाय है, घोसी है दामाद।
जब चाहे ससुराल में, हो जाये आबाद।।
हो जाये आबाद, साथ में नख़रे करता।
सीधी–सादी गाय, लगा इंजेक्शन दुहता।
बछड़ी–बछड़े त्रस्त, करे सेवा घर सारा।
आँखें रखता बंद, विवश है श्वसुर बिचारा।।

## ससुराल–सुख

सुख जीवन में चाहते, पास बसो ससुराल।
शर्म न करनी चाहिए, अपना है ये ख़्याल।।
अपना है ये ख़्याल, सभी हैं सेवा करते।
साली–सलहज–सास, नाज़–नख़रे सिर धरते।।
जो विपत्ति आ जाय, बाँटते सब मिलकर दुख।
साले करते काम, बैठकर घर भोगो सुख।।

## स्वारथ के सम्बन्ध

घर बाहर सबके बने, स्वारथ के सम्बन्ध।
कर पायें कुछ दिन नहीं, घर का ख़र्च प्रबंध।।
घर का ख़र्च प्रबंध, काटने सब दौड़ेंगे।
जो करते थे प्रेम, आपसे मुँह मोड़ेंगे।।
हैं स्वारथ–सम्बन्ध, चाहिए प्रेम–त्याग पर।
मिलकर करिए सहन, कष्ट में आ जाये घर।।

## काग़ज़ का नोट

मिलता जो वेतन हमें, सब हो जाता ख़र्च।
नहीं बचे जब चाहते, नमक, तेल या मिर्च।।
नमक, तेल या मिर्च, बढ़ी महँगाई ऐसी।
पैसे की दिन–रात, हो रही ऐसी–तैसी।।
काग़ज़ का है नोट, नोट फुर–फुर है उड़ता।
सोच–समझ व्यय करें, हमें जो वेतन मिलता।।

## माँ और ममता

दुनिया में सबसे बड़ा, सुत–जननी सम्बन्ध।
जीवन भर चलता रहे, फैले प्रेम–सुगंध।।
फैले प्रेम–सुगंध, पुत्र–हित माँ दुख सहती।
जीवन करती होम, किसी से क्या कुछ कहती?।।
हे, माँ! तुम्हें प्रणाम, रखो अपने आँचल में।
होते पुत्र कुपुत्र, कुमाता क्या दुनिया में?।।

## हिन्दुस्तानी पत्नी

हिन्दुस्तानी पत्नियाँ, होतीं बहुत महान।
उनके सारे गुणों का, कैसे करें बखान?।।
कैसे करें बखान?, कभी जौहर दिखलातीं।
पति पंरमेश्वर मान, साथ भरपूर निभातीं।।
हिन्दुस्तानी रीति, नीति कितनी लासानी।
दुनिया में अन्यत्र नहीं, ज्यों हिन्दुस्तानी।।

# सामाजिक

## आम आदमी

आम आदमी है वही, जो होता कमज़ोर।
ख़ास आदमी जानिए, जो होता सहज़ोर।।
जो होता सहज़ोर, आम की चटनी पीसे।
पका मिले जो आम, काट गर्दन, रस चूसे।।
डाल लगा जो आम, ढेले खाना लाज़मी।
दुर्गति होती यही, आज जो आम आदमी।।

## समाज के विलेन

होते कुछ व्यक्तियों में, रचनात्मक डिफ़ेक्ट।
कितना ही समझाइये, पड़ता नहीं इफ़ेक्ट।।
पड़ता नहीं इफ़ेक्ट, कभी उपकार न करते।
कर, कर, कर नुकसान, मज़े ले, लेकर हँसते।।
डरते उनसे लोग, चैन अपना भी खोते।
मार पड़े हों ठीक, विलेन समाज के होते।।

# जाति

सब कुछ बदले देश में, नहीं बदलती जाति।
हम सबका दुर्भाग्य है, फैलीं जाति–प्रजाति।।
फैलीं जाति–प्रजाति, बात बदलें क्षण–क्षण में।
बदल रहे ईमान, नज़र बदले फागुन में।।
करते क्या हम उचित? ज़रा सोचें तो कुछ–कुछ।
कर्म महत्त्व नगण्य, जाति ही है अब सब कुछ।।

# गुट और जाति

कठिन प्रश्न है सामने, गुट है श्रेष्ठ कि जाति?
कुछ तो गुट के साथ कुछ, पकड़े जाति–प्रजाति।।
पकड़े जाति–प्रजाति, नहीं कम उनकी संख्या।
डोलें गुट के साथ, रात हो, दिन हो, संध्या।।
चक्र–व्यूह यह कठिन, तोड़ना इसको लेकिन।
रहो भलों के साथ, करो हल यह प्रश्न कठिन।।

## बिना रीढ़ का आदमी

बिना रीढ़ का आदमी, बेज़ुबान हो दास।
इन्हें कभी मत छोड़िए, बना लीजिए ख़ास।।
बना लीजिए ख़ास, सेंकना अपनी रोटी।
मेहनत लो भरपूर, फेंकना छोटी बोटी।।
दया न करिए रंच, बनाएँ शक्ल मातमी।
रखिए संग सदैव, बिना रीढ़ का आदमी।।

## दुष्टों की रीति

सब लिख दें अच्छाइयाँ, भले व्यक्ति के नाम।
करवाते उससे रहें, उल्टे–सीधे काम।।
उल्टे–सीधे काम, नियम इस तरह बनायें।
सेवा करना धर्म, पुन्य सेवा कर पायें।।
देखें उसके दाग़, निजी चादर गंदी जब।
बुरे–बुरे ही लोग, भलों को कहें बुरा सब।।

## तब और अब

पहले बातें और थीं, उलट गया अब काल।
कैसे श्रवण कुमार थे, अब जवाब तत्काल।।
अब जवाब तत्काल, सही शिक्षा थे पाते।
अब जो पढ़ते पाठ, उलट कर उसे पढ़ाते।।
पहले था परमार्थ, स्वार्थ अब घर–घर टहले।
चिन्ताओं से ग्रस्त, मुक्त इनसे थे पहले।।

## ईर्ष्या

ईर्ष्या से भरपूर है, सारा आज समाज।
सभी प्रभावित हो रहे, सारे काज अकाज।।
सारे काज अकाज, बढ़ायें सबको आगे।
बनें श्रेष्ठ से श्रेष्ठ, भावना ऐसी जागे।।
बने स्वार्थ–परमार्थ, ख़त्म हो विकट समस्या।
आओ हम समवेत, मिटा दें सारी ईर्ष्या।।

## सही समाज

खाईं कई समाज में, इसीलिए कमज़ोर।
आओ हम मिलकर करें, इसे खूब सहज़ोर।।
इसे खूब सहज़ोर, व्यवस्थित होगा तब ही।
बिना लड़े ही लोग, लाभ पायेंगे सब ही।।
भाईचारा भूल, बुराई कितनी आईं?।
भेदभाव की सभी, पाट दें मिलकर खाईं।।

## अच्छे और बुरे

अच्छे लोगों पर नहीं, करता कोई ग़ौर।
ग़लत उन्हें करना नहीं, सही काम का दौर।।
सही काम का दौर, फ़िक्र दुष्टों की करते।
करें ग़लत वे काम, सही की हामी भरते।।
दुष्ट न पायें शांति, दूर अंगूरी गुच्छे।
करें दुष्ट का दमन, वही कहलाते अच्छे।।

## सीधा–सादा व्यक्ति

सीधे–सादे व्यक्ति का, कैसे हो निर्वाह?।
वह चलता सीधी डगर, सबकी टेढ़ी राह।।
सबकी टेढ़ी राह, देखकर बढ़े निराशा।
दुष्टों का सम्मान, समय का अजब तमाशा।।
सज्जन घुट–घुट जियें, मूल्य–मर्यादा लादे।
प्रभु! तुम रखना लाज, व्यक्ति जो सीधे–सादे।।

## अच्छों की बेक़द्री

हम अच्छे कैसे बनें?, मिले न जब सम्मान।
मिलें ठोकरें ही सदा, होता हो अपमान।।
होता हो अपमान, न उनको लोग पूछते।
काली चादर ओढ़, भलों के दाग़ ढूँढ़ते।।
सम्मानित हों बुरे, भलों को यह भारी ग़म।
दुर्गति होगी यही, नहीं बदलेंगे यदि हम।।

## सही व्यक्तियों की बेक़द्री

सही व्यक्तियों को नहीं, पहचानता समाज।
इसीलिए तो बढ़ रहा, है दुष्टों का राज।।
है दुष्टों का राज, सभी अपना सिर धुनते।
भाग्य–कर्म का लेख, कभी मीठा–कटु चखते।।
जब समाज में क़द्र, अच्छों की होगी नहीं।
बिगड़ेंगे सब लोग, हों चाहे मानव सही।।

## आदमी काटे का इन्जेक्शन

नहीं काटता है कभी, किसी साँप को साँप।
मनुज–मनुज को काटता, कारण सके न भाँप।।
कारण सके न भाँप, क्यों न वह प्यार बाँटता?।
इन्जेक्शन लें खोज, आदमी रोज़ काटता।।
इच्छाधारी नाग, घूमते मस्त सब कहीं।
ये पक्के शैतान, मनुज इन्हें कहना नहीं।।

## मित्र

रहते बनकर मीत, पर, पहुँचाते हैं ठेस।
कहलाते शैतान ये, रख मानुष का वेश।।
रख मानुष का वेश, संतुलन को बिगाड़ते।
रचते नहीं समाज, सदा ये डींग हाँकते।।
लगती दिल को ठेस, स्वयं को साथी कहते।
आते नहीं क़रीब, मीत बन कर पर रहते।।

## स्वेच्छाचारिता

चाहे जो कुछ मैं करूँ, होते हो तुम कौन?।
बीमारी यह बढ़ रही, रहना पड़ता मौन।।
रहना पड़ता मौन, बचाये फिरते इज़्ज़त।
बच्चों के मुँह लगो, पड़े होना बेइज़्ज़त।।
कलियुग गुरु माँ–बाप, मानते इसे न काहे?।
बहकाते हैं लोग, निकल कर देखो चाहे।।

## डारविन का सिद्धान्त

मियाँ डारविन कह गये, वे बन्दर–औलाद।
कुछ पर तो चरितार्थ है, सचमुच उनकी बात।।
सचमुच उनकी बात, छीनते और झपटते।
कर जाते चट माल, खौखिया उन्हें दपटते।।
कभी न आते पास, बढ़ाते ख़ूब दूरियाँ।
ये बंदर के पुत्र, सच कहें डारविन मियाँ।।

## हीरो और खलनायक

खलनायक यदि हों नहीं, हीरो हैं बेकार।
हीरो के निर्माण में, बनें वही आधार।।
बनें वही आधार, सदा खलनायक होते।
रावण होता नहीं, राम फिर राम न होते।।
नैतिक पतन समाज, मुझे अतिशय दुखदायक।
हीरो अन्तर्धान, दिखाई दें खलनायक।।

## पलायनवाद

जंगल की इस आग को, तुरत बुझाये कौन?।
सभी लोग निश्चिंत हैं, सब के सब हैं मौन।।
सब के सब हैं मौन, पलायनवादी हैं हम।
स्वार्थ करेंगे सिद्ध, हमारे जब तक है दम।।
नरभक्षी हैं व्याप्त, करें वे अपना मंगल।
उनके हमले बढ़े, बचे हैं गाँव न जंगल।।

## पत्नी और व्यवसाय

पत्नी बनती प्रेमिका, शौक़ बने व्यवसाय।
फिर तो पूरी मौज है, रंच न हल्ला–हाय।।
रंच न हल्ला–हाय, पुराने गाने गायें।
पूरा करके शौक़, साथ धन भर–भर लायें।।
है समाज का दोष, या कि यह करनी–भरनी।
अनचाहा है काम, और अनचाही पत्नी।।

## मदिरा–प्रयोग

शराबी एक नशे में, डूबा रहता मस्त।
घर की चिन्ता थी नहीं, घर वाले थे त्रस्त।।
घर वाले थे त्रस्त, मित्र ने कर दिखलाया।
कीड़ा मरा शराब, दूध में स्वस्थ दिखाया।।
कहा शराबी सोच, मद्य में नहीं ख़राबी।
कृमि नाशक यह दवा, रहे नित स्वस्थ शराबी।।

## औरत

औरत स्वयं स्वभाव से, होती है निस्सीम।
कभी–कभी अति प्यार दे, या फिर घृणा असीम।।
या फिर घृणा असीम, सख़्त है तो उदार भी।
औरत होती शक्ति, और अबला–अँगार भी।।
देवी काम–ममत्व, त्याग–स्वारथ की मूरत।
नींव–शीर्ष का योग, धन्य होती है औरत।।

# सच्चरित्र महिला–ईमानदार अफ़सर

सुन्दर महिला शीलयुत, कामी हित बेकार।
बेइमान अफ़सर न यदि, होती उंससे हार।।
होती उससे हार, दलाली–धंधा चौपट।
फँसे न लालच कभी, सदा ही होती खटपट।।
ये आदर्श मिसाल, अमर रहते हैं मरकर।
इनकी व्यापक दृष्टि, रचें समाज को सुन्दर।।

# हिन्दुस्तानी आदमी

हिन्दुस्तानी आदमी, बना हुआ अंग्रेज़।
रमेश से रोमेश की, बात सनसनी खेज़।।
बात सनसनी खेज़, बना लंदन का वासी।
भूल गया निज धर्म, सुसंस्कृति अच्छी ख़ासी।।
फोड़ा चीरा गया, भूली इंगलिशतानी।
चिल्लाया ''हे राम'', बन गया हिन्दुस्तानी।।

# राजनीतिक

## चुनाव

डाकू जी अध्यक्ष का, जीते जेल–चुनाव।
पत्रकार आकर कहें, काकू हाल सुनाव।।
काकू हाल सुनाव, बने कैसे मर्यादित?।
भीषण रहे डकैत, हुए कैसे निर्वाचित?।।
बोला वोटर जैस, वैस ही नेता काकू।
चोर देंय जब वोट, चुना जायेगा डाकू।।

## राजनीति

मेरा बेटा पूछता, राजनीति की नीति।
राजनीति में अभी तक, कोई बनी न रीति।।
कोई बनी न रीति, युधिष्ठिर झूठ बोलते।
अपना प्यारा देश, झूठ के मोल तोलते।।
राजनीति सिद्धान्त, अँधेरे का है डेरा।
इतना अवसरवाद!, करे छी–छी सुत मेरा।।

# लोकतंत्र

लोकतंत्र इस देश में, है कितना मज़बूत।
सारी दुनिया में नहीं, मैं दे रहा सुबूत।।
मैं दे रहा सुबूत, चलें साझा सरकारें।
कोई मित्र न शत्रु, किन्तु गुपचुप तकरारें।
घूस, घोटाले, लूट, करें भलों के वेश में।
कितना हुआ प्रसिद्ध, लोकतंत्र इस देश में।।

# स्वतंत्रता

आये जो मन में करो, अपना देश स्वतंत्र।
साँठ–गाँठ में दक्षता, प्रजातंत्र का मंत्र।।
प्रजातंत्र का मंत्र, किसी को मारो–पीटो।
और लगा इलज़ाम, मज़े से टाँग घसीटो।।
रिश्वत जाव डकार, कौन कर्त्तव्य निभाये?।
कभी गये फँस कहीं, बचाने नेता आये।।

## जनता

जनता करती फ़ैसला, हो चुनाव का दौर।
पास फ़ेल जनता करे, करतब पर कर ग़ौर।।
करतब पर कर ग़ौर, धराशायी हों कितने।
करते लाख प्रयत्न, दिखा हथकंडे अपने।।
समय–समय की बात, भीड़ का सिक्का चलता।
प्रजातंत्र की रीढ़, सदा होती है जनता।।

## मतदान

प्रत्याशी हैं घूमते, करें चुनाव–प्रचार।
बात–बात खाते कसम, अच्छा है व्यवहार।।
अच्छा है व्यवहार, कर रहे कितने वादे।
निर्वाचित हों अगर, पहनते नये लबादे।।
लालच है सर्वस्व, वही अब काबा–काशी।
सोच समझ दें वोट, सही जो हों प्रत्याशी।।

# राजनीति

शिक्षक, वणिक, वकील को, राजनीति से प्रीति।
वैज्ञानिक, अफ़सर, सुकवि, सीख न पाये रीति।।
सीख न पाये रीति, सुहाने पाठ पढ़ाना।
संवेदना न रंच, लक्ष्य है लाभ कमाना।।
हैं सिद्धान्त - विहीन, बने हैं लेकिन रक्षक।
राजनीति में सफल, वणिक, बैरिस्टर, शिक्षक।।

# नेता

नेता उसके सँग चले, पकड़े जो भी हाथ।
पौ बारह उस व्यक्ति के, जो नेता के साथ।।
जो नेता के साथ, काम होते सब उसके।
प्रजातंत्र का शेर, चले नेता तन–तन के।।
अच्छा हो या बुरा, यही तो नैया खेता।
हो जाये उद्धार, अगर हो अच्छा नेता।।

## अधूरी आज़ादी

आज़ादी सबको मिली, फिर भी रहे ग़ुलाम।
दफ़्तर में सरकार के, घर पत्नी के काम।।
घर पत्नी के काम, उठा सकते न कभी सिर।
अनुशासन आरोप, लगाये जाते फिर–फिर।।
दिशा-हीन है दौड़, देश, घर की बर्बादी।
आज व्यवस्था यही, अधूरी है आज़ादी।।

## नेता

नेता सत्तासीन हैं, मुट्ठी में संसार।
हवा खायँ जब जेल की, हो जाते बीमार।।
हो जाते बीमार, जेल में नख़रे करते।
देकर तर्क–कुतर्क, वहाँ भी ख़ूब अकड़ते।।
अवसरवादी ख़ूब, और पूरे अभिनेता।
देश जायगा डूब, न सुधरेंगे यदि नेता।।

## सदन

चक्की जैसा सदन है, सास–बहू दो पाट।
आपस में लड़–झगड़ कर, खड़ी करें वे खाट।।
खड़ी करें वे खाट, मुसीबत घर वालों की।
पिसते दोनों बीच, चना–जौ–गेहूँ–घुन भी।।
झगड़ा छोटी बात, बात कितनी है हल्की।
पिसे घृणा–विद्वेष, सदन हो ऐसी चक्की।।

## हिन्दुस्तानी आदमी

हिन्दुस्तानी आदमी, दुनिया में सिर–मौर।
राम, कृष्ण, अकबर, शिवा, तुलसी, मीरा और।।
तुलसी, मीरा और, बोस, जगदीश, खुराना।
गांधी, बुद्ध, कबीर, अटलजी, लक्ष्मी, राणा।।
पंत, निराला सूर, अबुल, अब्दुल, अम्बानी।
शीर्ष बनेगा विश्व, आदमी हिन्दुस्तानी।।

## राजनीति का दाँव

राजनीति का दाँव है, खींच पकड़ कर पैर।
पटक–पटक कर मारिए, हो जाये यदि बैर।।
हो जाये यदि बैर, न होता कोई अपना।
जब तक निकले स्वार्थ, नाम नित उसका जपना।।
रख अर्जुन की दृष्टि, करो संधान नीति का।
सुख चाहो लो सीख, दाँव तुम राजनीति का।।

## चूहा–बिल्ली–खेल

चलता रहता है यहाँ, चूहा–बिल्ली–खेल।
पूँजीपति बिल्ली बने, आपस में है मेल।।
आपस में है मेल, मज़ा क्रीड़ा में आता।
प्रजातंत्र है जहाँ, वहाँ चूहा दब जाता।
बिल्ली का हुड़दंग, देखकर दंग सफलता।
चूहे हैं ख़ामोश, हुक्म बिल्ली का चलता।।

## भाईचारा

आओ और क़रीब तुम, गले मिलें भरपूर।
साथ–साथ बैठें उठें, भेद–भाव हो दूर।।
भेद–भाव हो दूर, एक दोनों हो जायें।
पक्के बनकर दोस्त, प्रेम की अलख जगायें।।
ख़ूब निभेगा साथ, हाथ से हाथ मिलाओ।
हिन्दू–मुस्लिम बंधु, पास तुम दिल के आओ।।

## राजनीति

भला आदमी एक था, रखता सबका ध्यान।
राजनीति करने लगा, बदली नीति कमान।।
बदली नीति कमान, शुरू की खींचातानी।
बढ़ा किसी को गिरा, स्वार्थ-हित की मनमानी।।
राजनीति का खेल, दाँव–पेंच ही युग–कला।
भला करें जगदीश, जो करते सबका भला।।

# कार्यालयी

## अधिकारी

ऐसा अफ़सर चाहिए, हो हमदर्द महान्।
मातहतों के हितों का, रखता हो जो ध्यान।।
रखता हो जो ध्यान, यथा गुरु शिष्य का रखें।
तभी मातहत लोग, कर्म में निरत से दिखें।।
दोनों ही कर्त्तव्य, निभायें पितु–सुत जैसा।
कभी न हो टकराव, अगर दफ़्तर हो ऐसा।।

## कार्यालय

कार्यालय को समझिए, हरा–भरा परिवार।
कुछ होते हैं मातबर, कुछ हैं खर–पतवार।।
कुछ हैं खर–पतवार, किसी का भला न करते।
रखते ईर्ष्या, द्वेष, और स्वच्छन्द विचरते।।
बने किसी का काम, आ गई मानो परलय।
भले–भले मिल जायँ, सुधर जाये कार्यालय।।

# लेखा का दर्द

लेखा का वह काम है, जो पत्नी का काम।
दिन भर सिर धुनते रहो, नहीं मिले आराम।।
नहीं मिले आराम, सज़ा ऊपर से पाओ।
कहते हैं सब लोग, शीघ्र मुद्रा ले आओ।।
पत्नी का जो त्याग, उसे किसने है देखा?।
पति की सुनती डाँट, कहे फिर भी वह ले–खा।।

# चश्मा

लेखा में तैनात यदि, नहीं आपकी ख़ैर।
मित्रों से मिलना कठिन, मित्र समझते ग़ैर।।
मित्र समझते ग़ैर, सही यदि ड्यूटी करिए।
मदद न कोई करे, स्वयं ही लड़िए–मरिए।।
चश्मा लगा तुरन्त, लिखा जब धुँधला देखा।
चश्मा दे सरकार, नियुक्ति करे जब लेखा।।

# एयर होस्टेस

कर्मी सभा विधान के, खोलें नहीं ज़बान।
काम विधायक के करें, सहित मान–सम्मान।।
सहित मान–सम्मान, सदा मुस्काते रहते।
घर की होती देर, काम करके ही उठते।।
जल्दी करते काम, बात में कितनी नर्मी।
एयर होस्टेस बने, विधान सभा के कर्मी।।

# कुर्सी

कुर्सी दी भगवान ने, करने को ही न्याय।
जब तक दम में दम रहे, मत करना अन्याय।।
मत करना अन्याय, कर्मफल होगा भरना।
बचा रहे अस्तित्व, उचित सबका हित करना।।
जो भी है पद मिला, उसे कर दो आदर्शी।
क़ायम करो मिसाल, बढ़ाओ इज़्ज़त कुर्सी।।

# सरकारी नौकर

सरकारी मेहमान हैं, है शासन सर्वेन्ट।
बिना किए कर्त्तव्य कुछ, सफल सेंट परसेंट।।
सफल सेंट परसेंट, सभी का धर्म यही है।
पूरा कर दें काम, किसी की नियत नहीं है।।
क्रोध, लोभ, मद भरे, लोग कुर्सी–व्यापारी।
श्रम आवश्यक नहीं, नौकरी है सरकारी।।

# दफ़्तर में आराम

ग़लती की संभावना, अगर करेंगे काम।
बच्चों का चाहें भला, करें आप आराम।।
करें आप आराम, बॉस का साथ निभाएँ।
सम्भव हो तो उन्हें, कपट की राह दिखाएँ।।
झूठ बात, कम काम, नौकरी तब ही फलती।
कर्म–साधना व्यर्थ, न होगी बिलकुल ग़लती।।

## नौकरी के गुर

करते हो यदि नौकरी, उसके लो गुर जान।
कुर्सी पर जो भी दिखे, करो झूठ गुण–गान।।
करो झूठ गुण–गान, फ़ायदा भी पहुँचाओ।
चला स्वार्थ का दाँव, समय का लाभ उठाओ।।
अहम्, लोभ है बढ़ा, बात सच्ची हम कहते।
भले व्यक्ति को सभी, लाभ से वंचित करते।।

## दफ़्तर

खाना–पीना छोड़कर, तुरत बढ़ाते चाल।
ऑफ़िस टाइम दस बजे, हो न रजिस्टर लाल।।
हो न रजिस्टर लाल, नहीं पत्नी की ग़लती।
आप न खाना खायँ, बिचारी भूखी रहती।।
खाने के हित काम, पर प्रथम धर्म निभाना।
परहित जीवन लक्ष्य, लक्ष्य हित तज दें खाना।।

## लेखा–विभाग

लेखा में तैनात हम, रूखा–सूखा काम।
दूध–दही मिलता नहीं, सूख गया है चाम।।
सूख गया है चाम, अंक उलझाये रहते।
चाहे घर की देर, काम सबका हैं करते।।
देखे कई विभाग, बंद कर आँखें देखा।
दुबले–पतले लोग, वही विभाग है लेखा।।

## आयकर

सर मेरा है दुख रहा, देख देश–कानून।
ख़र्चा पूरा हो नहीं, कैसे मिले सुकून?।।
कैसे मिले सुकून? आयकर पड़ता देना।
मार्च बुद्धि डिस्चार्ज, क़र्ज़ है पड़ता लेना।।
क्लर्क आयकर देंय, बचे रहते लखपति पर।
पियन आयकर भरें, तभी ऊँचा होगा सर।।

# भ्रष्टाचार

## रिश्वत देवी

कैसा देखो भव्य है, रिश्वत–देवी - रूप।
इसको पाकर खिल उठें, भिक्षुक हों या भूप।।
भिक्षुक हों या भूप, लार सब ही टपकायें।
तरह–तरह के यत्न, ताकि इसको पा जायें।।
रिश्वत लक्ष्मी–सुता, चतुर्दिक् इसके पैसा।
झुककर करो प्रणाम, रूप है सुन्दर कैसा?।।

## फ़ाइल

फ़ाइल को पा दाब लें, हुनर एक से एक।
भ्रष्टाचारी फ़ितरती, करतब करें अनेक।।
करतब करें अनेक, लोभवश फ़ाइल रोकें।
होते हैं संतुष्ट, लोग जब उनको टोकें।।
होते हैं बेशर्म, झूठ के हरदम कायल।
डर जाता जब बैठ, निकल आती है फ़ाइल।।

# नोट की ताक़त

काग़ज़ की है नौकरी, काग़ज़ के हैं नोट।
नोटों का सब खेल है, भारी लूट–खसोट।।
भारी लूट–खसोट, नोट का धंधा करते।
नोटों में है शक्ति, इन्हें सिर–माथे धरते।।
निर्णय करते नोट, नोट ही सारी सजधज।
नोट रोकते काम, नोट क़िस्मत का काग़ज़।।

# कुर्सी का शेर

कुर्सी बैठे लोग कुछ, मचा रहे अंधेर।
बात–बात में गरजते, हैं कुर्सी के शेर।।
हैं कुर्सी के शेर, बड़ों सँग खीस निपोरें।
मिल जाये कमज़ोर, अस्थि से रक्त निचोड़ें।।
सही काम हो तभी, करें मिल मातम-पुर्सी।
नहीं हिलाये हिले, जिसे मिल जाये कुर्सी।।

## रिश्वत

अगर हाज़मा ठीक हो, जाओ माल डकार।
काम न रिश्वत के बिना, सगा बन्धु, हो यार।।
सगा बन्धु, हो यार, प्यार से पार न पाना।
कर लो पोढ़ी गाँठ, लगा है बुरा ज़माना।।
यह जीवन बेकार, मौज मस्ती से हटकर।
फ़ाक़ा-मस्ती करें, पचे नहीं रिश्वत अगर।।

## हाथ नीचे–हाथ ऊपर

सरकारी थी नौकरी, पद था गणनाकार।
नीचे–नीचे हाथ में, रिश्वत की भरमार।।
रिश्वत की भरमार, इसी में गई नौकरी।
हुए बहुत बदनाम, भूल सब गई चौकड़ी।।
होगा ऊपर हाथ, करेंगे ठेकेदारी।
नीचे था तब हाथ, नौकरी जब सरकारी।।

## सोर्स

कुन्टल भर यदि सोर्स हो, सभी काम हो जायँ।
बिना सोर्स के आम जन, धक्के–मुक्के खायँ।।
धक्के–मुक्के खायँ, या कि कम्प्लेंट करेंगे।
कुत्ता घर का शेर, शेर का क्या कर लेंगे?।।
पौवे का न प्रयोग, हुआ अब पौवा निष्फल।
अगर कराना काम, लगा दो पूरा कुन्टल।।

## लूट–पाट का काल

लूट–पाट का काल है, लूट सको लो लूट।
अपना देश स्वतंत्र है, मिली सभी को छूट।।
मिली सभी को छूट, दृश्य सुन्दर से सुन्दर।
भ्रष्टाचारी दौड़, हिन्द का दसवाँ नम्बर।।
खा–पी रहो प्रसन्न, मुफ़्त लूट का माल है।
सच की गले न दाल, लूट–पाट का काल है।।

## मिलकर खायें

खाते रहते जानवर, सदा अकेले घास।
खाते हैं जब आप कुछ, कोई रखिए पास।।
कोई रखिए पास, मनुज का यही धर्म है।
इसीलिए यह कथन, गृहस्थी धर्म–कर्म है।।
रिश्वत ली चुपचाप, नप गये अश्रु गिराते।
निश्चित रहते बचे, बाँटकर मिलकर खाते।।

## चोरी

चोरी से डरना नहीं, चोरी बढ़िया कर्म।
चोरी कर–कर, कर रहे, कितने कर्म–कुकर्म।।
कितने कर्म–कुकर्म, ऐंठकर हरदम चलते।
मौसेरे बन बंधु, शान से चोर निकलते।।
देनी नहीं रसीद, उन्हें प्रिय रिश्वत ख़ोरी।
इतना रखते ध्यान, सँभल कर करते चोरी।।

## पत्नी का उपदेश

झूठ बोलना छोड़ दो, पत्नी का उपदेश।
क्रोध पाप का मूल है, हरदम होता क्लेश।।
हरदम होता क्लेश, कलह का होता डेरा।
बाँचो वेद–पुराण, न होगा मति–भ्रम फेरा।
जाऊँगा सब छोड़, पहनकर पीत चोलना।
पत्नी बोली सहम, मुझे प्रिय झूठ बोलना।।

## स्वराज

पिऊँ–पिलाऊँ ख़ूब अब, बहुत ख़ुशी है आज।
डरना किससे है मुझे, आया आज स्वराज।।
आया आज स्वराज, गई है पत्नी पीहर।
सोच रहा हूँ शाम, मिलूँ प्रेयसि से जी भर।।
ख़ुशियाँ या ग़म मिलें, पीते–पीते ही जिऊँ।
यों भी आदत पड़ी, ख़ुशी–ख़ुशी से मैं पिऊँ।।

# अवसरवादिता

## अवसरवादी

अवसरवादी घेरते, मंत्री जी को दौड़।
मक्खी जैसे चिपककर, जाते हैं हर ठौर।।
जाते हैं हर ठौर, सामने जा मिमियायें।
बोलें मीठा झूठ, प्रदूषण भी फैलायें।।
जनता हो नाराज़, ख्याति की हो बर्बादी।
खतरनाक हों सिद्ध, बिचरते अवसरवादी।।

## मक्खनबाज़ी

मिला मुझे शायद कभी, कोई विवेकशील।
दिया न हो उसने कभी, मक्कारों को ढील।।
मक्कारों को ढील, लेप मक्खन का करते।
पाकर मौका तुरत, सदा झोली को भरते।।
मान लीजिए बात, किसी को भला क्या गिला?।
मक्खन में अगर कुछ, चूना भी होगा मिला।।

## सही गुर

खुशामदी ही शेर हैं, हर दफ़्तर की बात।
अच्छे–अच्छे रो रहे, खाते रहते मात।।
खाते रहते मात, शांति चाहो घर–दफ़्तर।
मक्खन मलते रहो, रोज़ पत्नी औ' अफ़सर।।
यही कसौटी ख़री, बता रही यह शताब्दी।
बना स्वार्थ को धर्म, डटे रहते खुशामदी।।

## बालि के वंशज

वंशज हैं ये बालि के, सारे मक्खनबाज़।
आधी ताक़त खींचते, जिसके सिर हो ताज।।
जिसके सिर हो ताज, मुखौटे कितने रखते?।
जैसे बनता काम, भेष वैसा ही धरते।।
समझो पहले इन्हें, रखो फिर थोड़ा धीरज।
उचित आड़ ले भिड़ो, बालि के यह सब वंशज।।

## अंदर और बाहर

अंदर से कुछ और हैं, बाहर से कुछ और।
ऐसों के व्यवहार पर, करना हरदम ग़ौर।।
करना हरदम ग़ौर, धर्म जिनका पैसा है।
अपना रखना ध्यान, समय आया ऐसा है।।
करते जो एहसान, उन्हीं के भोकें ख़ंजर।
बाहर से बन दोस्त, काट दें अंदर–अंदर।।

## लगुए–भगुए

मधुर–मधुर हैं बोलते, नहीं कर सकें त्याग।
स्वार्थ सधे चिपटे रहें, दूर जायँ फिर भाग।।
दूर जायँ फिर भाग, खुदग़रज़ होते ऐसे।
किसी तरह हो काम, न सोचें होगा कैसे।।
अफ़सर रहें प्रसन्न, सोचते ऐसे वे गुर।
कड़वी है तासीर, बोलते लेकिन सुमधुर।।

## अवसरवादी

रहें फ़ायदे में सदा, अवसरवादी लोग।
गिरगिट का सा रँग बदल, करते सुविधा-भोग।।
करते सुविधा-भोग, बड़ों के साथ विचरते।
पा जायें कमज़ोर, निगलते कभी न डरते।।
परजीवी ये लोग, धारा के सँग–सँग बहें।
ये सत्ता के साथ, हैं मुर्दा ज़िन्दा रहें।।

## मक्कारी का ज़माना

मक्कारी का है समय, सच्चे पाते कष्ट।
ख़त्म हो रहा न्याय है, मज़ा कर रहे दुष्ट।।
मज़ा कर रहे दुष्ट, आज सिरमौर कहाते।
कमज़ोरों को सता, दूध से रोज़ नहाते।।
सच सुनना न पसंद, झूठ खेती सहकारी।
अनुदिन बढ़ता लोभ, बढ़ रही है मक्कारी।।

## सजातीय शत्रु

कहता अपनी बात मैं, मन चाहे लो मान।
बन्धु–बन्धु तो ही अधिक, करते हैं नुक़सान।।
करते हैं नुक़सान, पोल सारी वे जानें।
थोड़ा ऊपर उठो, टाँग खींचें सुख मानें।।
सजातीय अपमान, बहुत कलपाता रहता।
सबका हिस्सा जोत, वंशधर अपना कहता।।

## बेशर्मी

बेशर्मी सबसे भली, भली–भाँति लो ओढ़।
फिर चाहे जो भी करो, चिन्ता दो सब छोड़।।
चिन्ता दो सब छोड़, सीख लो छल-मक्कारी।
कलियुग का है समय, इन्हीं से दुनिया हारी।।
उल्टा–सीधा करो, बात में बरतो नर्मी।
बहुत कीमती वस्त्र, ओढ़ लो तुम बेशर्मी।।

# मक्कार

चेहरे मक्कारी - भरे, बदलें रूप अनेक।
दे करके विश्वास भी, बदलें एकाएक।।
बदलें एकाएक, बँदर–घुड़की हैं देते।
कभी दिखाते प्यार, छीन फिर उसको लेते।।
द्वेष–भावना - ग्रस्त, चलें वे निशिदिन मोहरे।
करो नहीं विश्वास, जान लो ऐसे चेहरे।।

# मक्कारी

सुख से जीना चाहते, सीखो देना दाँव।
फिर कोई चिन्ता नहीं, शहर बसो या गाँव।।
शहर बसो या गाँव, बोलना मीठा सबसे।
हो जाये विश्वास, कान काटो फिर तब से।।
कलियुग का है समय, मिले इसमें दुख ही दुख।
मक्कारी लो सीख, चाहते यदि पाना सुख।।

# हास्य–व्यंग्य

## मूँछें

मूँछें सबकी शान हैं, रखिए इनकी लाज।
मूँछों की किस्में बहुत, अलग–अलग अंदाज़।।
अलग–अलग अंदाज़, कुछ बर्छी–तलवार सी।
कुछ ऐंठी, कुछ उठीं, कुछ लम्बी पतवार सी।।
ईश्वर को प्रिय लगें, न मानें सबसे पूछें।
झड़ते सिर के बाल, पर झड़ें कभी न मूँछें।।

## सफाचट मूँछें

साले की बारात में, रोब हो गया हाफ़।
नाई ऐसा पिल पड़ा, मूँछें कर दीं साफ़।।
मूँछें कर दीं साफ़, सफ़ाचट ही अब रखता।
साली की है राय, कि अब मैं सुन्दर लगता।।
लूँ लगाम मुँह बाय, पड़ा साली के पाले।
लगते अच्छे बहुत, सालियाँ, सलहज, साले।।

## सुन्दरियों का नमस्कार

नमस्कार मुझको करें, सुन्दरियाँ कर जोड़।
अब चिन्ता मुझको नहीं, पत्नी जाये छोड़।।
पत्नी जाये छोड़, हुई उसको बेचैनी।
पता लगाने लगी, कौन हैं ये मृगनयनी।।
बात बताई तभी, देख अश्रु उसके झरें।
पढ़तीं टी.वी. न्यूज, नमस्कार मुझको करें।।

## पत्नी और प्रेयसि

मेरी प्रेयसि पूछती, करते हो क्या प्यार?।
प्यार तुम्हें करता बहुत, तुम मेरा संसार।।
तुम मेरा संसार, साथ का वादा कर लें।
करें शीघ्र हम ब्याह, प्यार से जीवन भर लें।।
मैं बोला कर ब्याह, बनोगी मेरी चेरी।
अगर चाहती प्यार, रहो बन प्रेयसि मेरी।।

## बीवी और टी.वी.

बीवी की चिन्ता नहीं, टी.वी. से है प्यार।
काम नहीं घर का करूँ, हो जाती तकरार।।
हो जाती तकरार, अतिथि कोई घर आयें।
कैसे हो सत्कार? उसे भी पास बिठायें।।
चाहे जो हो जाय, नहीं छोड़ेंगे टी.वी.।
टी.वी. मेरी सौत, सदा कहती है बीवी।।

## टी.वी वाली पत्नी

ऐसी पत्नी चाहिए, टी.वी में जो रूप।
इठला इतरा कर चले, अच्छा रूप–स्वरूप।।
अच्छा रूप–स्वरूप, प्यार ही सदा जताये।
आये चाहे रात, साथ मुद्रा घर लाये।।
मुझे रचाना ब्याह, न लानी ऐसी–वैसी।
कलाकन्द सी मधुर, चाहिए पत्नी ऐसी।।

# बीमारी

बीमारी से सुख मिले, देखो बन बीमार।
प्यार ख़ूब पत्नी करे, बीमारी दिन चार।।
बीमारी दिन चार, प्रेम सारे दिखलायें।
जो रहते थे दूर, पास सब दौड़े आयें।।
आ दफ़्तर से कभी, कहो यों ही सिर भारी।
लगते पत्नी हाथ, दूर सारी बीमारी।।

# पब्लिक और प्रेमिका

पब्लिक हो या प्रेमिका, दोनों एक समान।
रीझ जायँ किस पर, कहाँ, यह जानें भगवान।।
यह जानें भगवान, देखते सब हैं नख़रे।
निकल जाय जब काम, न दिखते उनके चेहरे।।
कभी बिठाये शीश, कभी देती है फ्री किक।
रखना पूरा ध्यान, प्रेमिका हो या पब्लिक।।

## शादी

शादी कन्या से हुई, जो छोटी दो फ़ीट।
सब सम्बन्धी देख के, माथा लेते पीट।।
माथा लेते पीट, भेद कुछ समझ न आया।
बहुत पूछने पर, चुपके से राज़ बताया।।
नीची रखकर नज़र, बात करने का आदी।
सुविधा होगी बहुत, इसी से कर ली शादी।।

## लक्ष्मीजी

लक्ष्मी हैं सहधर्मिणी, घर में घटे न अन्न।
एक मित्र ने हँस कहा, तब तो तुम सम्पन्न।।
तब तो तुम सम्पन्न, सवारी क्या है उनकी?।
उसने किया सवाल, बात मुझको कुछ खटकी।।
बोला होकर दुखी, उन्हें है कौन सी कमी?।
मैं ही वाहन बना, मुझी पर सवार लक्ष्मी।।

# भाईचारा

भाईचारा लो निभा, छोड़ जाति औ' धर्म।
जिसमें हो अपना भला, ऐसे करना कर्म।।
ऐसे करना कर्म, डालना सबको चारा।
जिसका भरता पेट, वही बन जाय तुम्हारा।।
जो है ख़ाली हाथ, वही भाई बेचारा।
चारा सबको डाल, बढ़ाओ भाईचारा।।

# कवि से शिकायत

सुनता कोई था नहीं, चलें सीट पर नोट।
आतीं बहुत शिकायतें, हो अफ़सर पे चोट।।
हो अफ़सर पे चोट, सीट पर दूजा भेजा।
रिश्वत तो कम हुई, जला पर रोज़ कलेजा।।
बाबू था वह सुकवि, लिखा करता था कविता।
करता उसका काम, काव्य जो उसका सुनता।।

## दाढ़ी

दाढ़ी से क्या फ़ायदा, परेशान है जान।
बिना बुलाये आ सुबह, बन जाती मेहमान।।
बन जाती मेहमान, सुबह उठकर सहलाओ।
द्रव्य–समय की हानि, देर से दफ़्तर जाओ।।
मट्ठे की हो खोज, ख़त्म हो जड़ से झाड़ी।
चेहरा चिकना साफ, बना रहता बिन दाढ़ी।।

## पिछड़ा हुआ भारत

पिछड़ा हुआ है कितना, इंडस्ट्री में देश।
सब प्रयोग कर–कर थके, कोई युक्ति न शेष।।
कोई युक्ति न शेष, देश जापान निराला।
सूझा मुझे उपाय, ख़ूब जब देखा–भाला।।
आबादी दें बदल, देश हो जाये तगड़ा।
भारतवासी कहें, न है अब भारत पिछड़ा।।

# गोरखधंधा

दो रुपये हों जेब में, कह दो हैं दो लाख।
फिर देखो रँग जमेगा, साथ बढ़ेगी साख।।
साथ बढ़ेगी साख, लालची तलवे चाटें।
ख़ूब कमाओ माल, और फिर मिलजुल बाँटें।।
मूर्खों की क्या कमी? फँसे उनको फँसने दो।
दो के बदले बीस, मिलें धंधा चलने दो।।

# ट्रेनिंग

आवश्यक ट्रेनिंग यही, शासन खोले स्कूल।
दिन भर में लखपति बनें, बना–बना कर .फूल।।
बना–बनाकर .फूल, नीति कुछ सीखें ऐसी।
साली रहे प्रसन्न, प्रेयसी पत्नी जैसी।।
कामचोर सिर मौर, धूर्त कहलायें लायक़।
मिले ऐश ही ऐश, यही ट्रेनिंग आवश्यक।।

## मस्तिष्क

मिलते रहते बहुत जन, अलग–अलग है बात।
प्रश्न एक ही पूछिए, उत्तर मिलते सात।।
उत्तर मिलते सात, हेतु कुछ समझ न पाया।
प्राप्त हुआ है ज्ञान, बुद्धि का ज़ोर लगाया।।
अपने ये मस्तिष्क, विकृत कम्प्यूटर लगते।
फीडिंग एक समान, एक परिणाम न मिलते।।

## दार्शनिक

छड़ी लिए, थे टहलते, एक दार्शनिक मैन।
मन ही मन थे सोचते, घर जाकर लें चैन।।
घर जाकर लें चैन, छड़ी कोने में रखकर।
जूते–हैट उतार, लेट सोयें बिस्तर पर।।
भूल गये घर पहुँच, हो गई एक गड़बड़ी।
कोने में खुद खड़े, लिटाई पलँग पर छड़ी।।

## दाल में कंकड़

कंकड़ निकला दाल में, पति अतिशय नाराज़।
आँखें रख अंधी बनीं, आती तुम्हें न लाज।।
आती तुम्हें न लाज, काम सब उलटे करतीं।
.खूब बनाव सिंगार, काम पर ध्यान न धरतीं।।
पत्नी बोली खीझ, बन्द कर दो यह बड़बड़।
दाँत लिए बत्तीस, पीस पर सके न कंकड़।।

## साले की ताक़त

मुझसे पत्नी कुपित है, खड़ी हो गई खाट।
साले ने ऐसा किया, मुझे खिला दी डाँट।।
मुझे खिला दी डाँट, नियत मेरी भी डोली।
साले का था काम, उसे मैंने दी गोली।।
निकला यह परिणाम, न खाना मिला सुबह से।
बतलाओ क्या करूँ?, रुष्ट है पत्नी मुझसे।।

## रविवार वाले पापा

पापा जब जाते चले, तब होती है भोर।
आते हैं वे रात में, पापा बहुत कठोर।।
पापा बहुत कठोर, सुबह सब पर झल्लायें।
माँ को होता कष्ट, रात खायें सो जायें।।
इतना चलते रोज़, भूलते अपना आपा।
मिलते वे रविवार, एम.एस.टी. यात्री पापा।।

## रेल विभाग के मित्र

छत पर बैठे रेल की, गायें .खूब मल्हार।
ठंडी–ठंडी हवा पा, भूल गये संसार।।
भूले गये संसार, रेल के परम हितैषी।
डिब्बे में है भीड़, भीड़ की ऐसी–तैसी।।
बने ड्राइवर कुशल, जमे हैं अपनी दम पर।
एक फ़ायदा और, न टी.टी. आता छत पर।।

## प्यारी साइकिल

प्यारी सी है साइकिल, मज़ेदार, दमदार।
चढ़े–चढ़ाये रोज़ यह, करती बेड़ा पार।।
करती बेड़ा पार, न वाहन इसके जैसा।
पत्नी करे पसंद, न लगता ज़्यादा पैसा।।
.खूब उठाती बोझ, लादती तीन सवारी।
उपयोगी यह बहुत, साइकिल प्यारी–प्यारी।।

## रोना स्वभाव

रोते रहते नित्य ही, रोना बना स्वभाव।
मिलते हैं रोते हुए, जैसे डूबी नाव।।
जैसे डूबी नाव, उन्हें कैसे समझायें।
होते बहुत प्रसन्न, अगर साथी दुख पायें।।
मिले स्वर्ग–अपवर्ग, कभी संतुष्ट न होते।
अपनी सारी उम्र, बिताते रोते–रोते।।

## झगड़ा

झगड़ा हो यदि किसी से, लो बदले की ठान।
मौक़ा मिले सलाह दो, निर्मित करो मकान।।
निर्मित करो मकान, क़र्ज़ लेकर के झटपट।
दीवारें हों खड़ीं, स्लेप डलवाओ चटपट।।
रिपु कर्ज़ी हो जाय, न होगा तुमसे तगड़ा।
पूरा हो न मकान, न कर पाए वह झगड़ा।।

## टी.वी. बाज़ार

लाये हैं सामान कुछ, घूम–घूम बाज़ार।
दादा मुनि से चप्पलें, बच्चन से ली कार।।
बच्चन से ली कार, झाड़ू तल्सानिया से।
जुही चावला तेल, औ' पेस्ट ऐश्वर्या से।।
श्रीदेवी से लक्स, खरीदा औ' हर्षाये।
घूमें टी.वी. बाज़ार, और ख़ुशियाँ लाये।।

# निन्दा–रस

निन्दा–रस का लो मज़ा, कुछ लोगों के संग।
टाँग खींच लो किसी की, मिलकर कर लो तंग।।
मिलकर कर लो तंग, ख़ाल इज़्ज़त की खींचो।
जड़ उखाड़ लो और, ख़ूब मट्ठे से सींचो।।
चला जाय सर्वस्व, डाल दो ऐसा फंदा।
मौज मनाओ रोज़, शौक़ पालो परनिन्दा।।

# कुत्ते की वफ़ादारी

कुत्ते बहुत महान तुम, कितने निष्ठावान।
पालन-पोषण जो करे, वही तुम्हें भगवान।।
वही तुम्हें भगवान, नहीं मानव से सीखा।
धोखा उसके साथ, रहे जो मित्र सरीखा।।
बता रहा हूँ ख़बर, लोग यह कहते-सुनते।
ख़तरनाक है मनुज, गेट पर लिखते कुत्ते।।

# कवि–कविता

## सुकवि

उसको ही मानें सुकवि, जिसे न धन का लोभ।
पर–उपकार किया करे, नहीं कष्ट में क्षोभ।।
नहीं कष्ट में क्षोभ, साफ़ दिल का फक्कड़ हो।
क़लम न बोले झूठ, .ज़ुल्म से जब टक्कर हो।।
बहुत कठिन कवि–धर्म, तपस्या करनी कवि को।
जिसने पकड़ी क़लम, सत्य पर चलना उसको।।

## कविता

कविता उतरे स्वयं ही, बिलकुल परी समान।
स्वागत उसका मैं करूँ, जैसे प्रिय मेहमान।।
जैसे प्रिय मेहमान, रात में अक्सर आती।
करती मुझको प्यार, .ख़ूब जब अवसर पाती।।
अरुणोदय सा हृदय, उतरती कविता–सविता।
सब कुछ देती मुझे, शांति, यश, प्रभुता कविता।।

## कविता पर अधिकार

कविता पर है आपका, पूरा ही अधिकार।
जन्म आप ही दे रहे, घृणा करें या प्यार।।
घृणा करें या प्यार, हौसला रहें बढ़ाते।
दर्द और अपनत्व, आप ही रहें लिखाते।।
दिया कभी यदि दर्द, हुई संवेदित सरिता।
अगर दे दिया प्यार, बनी मीठी सी कविता।।

## कविता–लेखन

कविता लिखने को हुआ, कर अतीत को याद।
अक्षर एक न लिख सका, समय हुआ बर्बाद।।
समय हुआ बर्बाद, मुझे यह ज्ञात हुआ तब।
आस–पास जो लोग, वही तो विषय-वस्तु सब।।
मिलें वृद्ध–विद्वान, बात उनकी मैं सुनता।
दुष्ट–भले जो साथ, उन्हीं पर लिखता कविता।।

## कविता और चिकित्सा

कविता और इलाज की, पद्धतियाँ हैं तीन।
ऐलोपैथिक काव्य की, बजे मंच पर बीन।।
बजे मंच पर बीन, कविन में आयुर्वेदिक।
पुस्तक में ही ठीक, अगर हों होम्योपैथिक।।
रहे सूत्र का ध्यान, बात अनुभव की कहता।
श्रोता भाव–विभोर, सुनाओ जमकर कविता।।

## हास्य और व्यंग्य

जनक हँसी का हास्य है, सबको देता हर्ष।
प्रिय की चुटकी दे यथा, खुशियों का उत्कर्ष।।
खुशियों का उत्कर्ष, व्यंग्य तो चुभता रहता।
चुप न रहो इस भाँति, बढ़ो आगे, वह कहता।।
हँसना है लाभकर, चुप रहना चिन्ताजनक।
सुनो–गुनो तुम हास्य, सभी रसों का यह जनक।।

## अनलिखा श्रृंगार

लिखा न कुछ श्रृंगार पर, लोग पूछते राज़।
यह रहस्य की बात है, तुम्हें बताऊँ आज।।
तुम्हें बताऊँ आज, गीत श्रृंगारिक लिखता।
पत्नी करती खोज, प्रेम किस–किस से करता।।
पत्नी हो नाराज़, फाड़ती गीत जो लिखा।
तब से हुआ हताश, रहा श्रृंगार अनलिखा।।

## सुन लो एक कवित्त

बच्चे से थे कह रहे, सुन लो एक कवित्त।
नहीं–नहीं वह कह रहा, नहीं दे रहा चित्त।।
नहीं दे रहा चित्त, हाथ उसका था थामा।
हाथ छुड़ाने हेतु, किया उसने हंगामा।।
कमरे में थे लोग, दिए गच्चे पे गच्चे।
सुना दिये दस गीत, सहम बैठे सब बच्चे।।

# लोकल कवि

कवि सम्मेलन आ गया, लोकल कवि बेचैन।
मुझे बुलाया क्यों नहीं, उनके सूजे नैन।।
उनके सूजे नैन, ढूँढ़ संयोजक घेरा।
कर देंगे हम शोर, नाम यदि रखा न मेरा।।
श्रोता लाए बीस, बढ़ाये सम्मेलन छवि।
संयोजक ने कहा, पढ़ेगा वह कविता कवि।।

# स्थानीय कवि

श्रोता कवि दरबार में, करें शोर पर शोर।
कवि अच्छी कविता पढ़ें, पर वे होते बोर।।
पर वे होते बोर, हास्य कवि फ़ौरन आये।
पूछा बने विनम्र, कौन रस तुमको भाये?।।
बोले कवि स्थानीय, न भेजा हमको न्योता।
हूटिंग की यह वजह, नहीं हैं हम सब श्रोता।।

# कविता और जन–भाषा

कविता की भाषा वही, जन–मन करे पसंद।
अगर भरा पाण्डित्य हो, करो किताबें बंद।।
करो किताबें बंद, नहीं मजबूरी पढ़ना।
बिम्ब, कल्पना, चित्र, नहीं आसान समझना।।
सीधी–सच्ची बात, निनादित हो सुर–सरिता।
श्रोता कह दें वाह, सुनें जब ऐसी कविता।।

# क्रांति गीत

ऐसे गाएँ गीत हम, मच जाये जो क्रांति।
दूर सभी अन्याय हों, मिट जाये सब भ्रांति।।
मिट जाये सब भ्रांति, जोश में शासन आये।
चलें ग़लत जो राह, होश में अफ़सर आयें।।
राजनीति व्यापार, देश का ठेका जैसे।
मिले न उनको शांति, गीत गायें हम ऐसे।।

## कवि

सुनते अपना स्वार्थ तज, कवि ने कसा लँगोट।
सही बात कहता सदा, खाता रहता चोट।।
खाता रहता चोट, भाव शुचि सब में भरता।
बिना फीस का वैद्य, शुद्ध तन, मन को करता।।
करें दुष्टता दुष्ट, सही पथ कभी न चुनते।
कवि तो करे प्रयत्न, न ये सब उसकी सुनते।।

## प्रेमिका

नाता प्रेयसि से जुड़ा, पत्नी को है कष्ट।
पत्नी से कम बोलता, शांति हुई है नष्ट।।
शांति हुई है नष्ट, न पकड़ा कभी गया मैं।
हुआ प्रेम का असर, ख़ूब डूबता गया मैं।।
पत्नी बिल्कुल पस्त, नहीं कुछ उसको भाता।
कविता प्रेयसि बनी, जुड़ा उससे ही नाता।।

# मातृ–भाषा हिन्दी

हिन्दी भाषा कम नहीं, बात लीजिए मान।
लिपि वैज्ञानिक साथ ही, इसके छंद महान।।
इसके छंद महान, उपेक्षा इसकी घातक।
भाषा ही होती है, संस्कृति की संवाहक।।
रग–रग में है रची–बसी, यह नहीं अहिन्दी।
पढ़ो लिखो तुम ख़ूब, हिन्द की भाषा हिन्दी।।

# क़लम

क़लम बहुत है काम की, साथ रखो दिन–रात।
जो चाहो लो नोट कर, हो मतलब की बात।।
हो मतलब की बात, ध्यान में रखना हो जो।
पढ़कर कर लो याद, काम नित लेना हो तो।।
क़लम शांति–सुख–सिद्धि, अशिव हित काँता–बल्लम।
माँगे कर दो मना, नहीं मिले वापस क़लम।।

# नीतिपरक

## सुन्दरता

सुन्दरता को देख लें, रहिए उससे दूर।
रूप-भोग में सुख नहीं, बात सही भरपूर।।
बात सही भरपूर, तत्त्व उपलब्ध न होगा।
नहीं मिलेगी तुष्टि, अगर अपनत्व न होगा।।
है यह माया–जाल, रूप सबको है छलता।
जब सुन्दर हो दृष्टि, दिखे मन की सुन्दरता।।

## पैसा

पैसा सबको प्रिय लगे, पैसा ऊँची जाति।
अगर पास पैसा नहीं, तो वह जाति–कुजाति।।
तो वह जाति–कुजाति, न पूछे उसको कोई।
श्रम–चरित्र सब व्यर्थ, प्रतिष्ठा इनकी खोई।।
जनता है सर्वस्व, ढोंग रचते ये कैसा?।
लाठी की है भैंस, आज सब कुछ है पैसा।।

# अच्छा आदमी

करता रहता खोज मैं, सही आदमी कौन।
ठीक न परिभाषा मिली, लगा ग्रन्थ हैं मौन।।
लगा ग्रन्थ हैं मौन, पूछने किससे जाऊँ।
चक्कर में है बुद्धि, समझ मैं तत्त्व न पाऊँ।।
चिन्तन जो फिर किया, बही विवेक की सरिता।
है वह व्यक्ति महान, भला जो सबका करता।।

# अच्छाई और बुराई

सदा मिली अच्छी–बुरी, दुनिया की हर चीज़।
हमको होनी चाहिए, इसकी सही तमीज़।।
इसकी सही तमीज़, विवेक इसी को कहते।
बुरे अंश को छोड़, श्रेष्ठ को कैसे गहते।।
दृष्टि संतुलित अगर, बुद्धि हो शुद्ध सर्वदा।
अच्छी संगति करें, मिलेगी सिद्धि ही सदा।।

## प्रिय बोलिए

सोच समझकर बोलिए, मत करिए बकवास।
ऐसा कभी न बोलिए, खो जाये विश्वास।।
खो जाये विश्वास, बात बदलें क्षण–क्षण में।
बदल रहे ईमान, नज़र फेरें हर क्षण में।।
यदि पाना सम्मान, बात को ख़ूब तोलिए।
करें लोग विश्वास, सोच समझकर बोलिए।।

## जिनकी बदले बात

उनसे क्या बातें करें? उनकी क्या औक़ात?।
वे भी क्या हैं आदमी?, जिनकी बदले बात।।
जिनकी बदले बात, धूर्त, झूठे कहलाते।
बेइज़्ज़त हों फिर भी, वे मीठे फल खाते।।
स्वारथ ही है धर्म, मिलें गाली बहुतों से।
करें इकट्ठा पाप, न्याय क्या होता उनसे?।।

## क्षमा

महानता करना क्षमा, भारत की पहचान।
क्षमा करें धोखा मिले, चाहे हो अपमान।।
चाहे हो अपमान, टेक अपनी न छोड़ता।
उर में रंच न मैल, पैर पीछे न मोड़ता।।
हो कितना मक्कार, बैर की हो प्रधानता।
क्षमाशील यह देश, क्षमा इसकी महानता।।

## करें कुछ ऐसा

आओ हम पूरे करें, ऐसे अपने स्वार्थ।
जिनसे हो सबका भला, बन जाये परमार्थ।।
बन जाये परमार्थ, पुण्य - फल पायें सारे।
आयें ऐसे भाव, लगें सब प्यारे–प्यारे।।
परहित में जो निरत, नित्य उत्साह बढ़ाओ।
बढ़ें भले ही लोग, करें कुछ ऐसा आओ।।

## भले

भले व्यक्ति दुख झेलते, होती मुझको ग्लानि।
मनसा, वाचा, कर्मणा, करें न किंचित् हानि।।
करें न किंचित् हानि, न्याय ईश्वर का कैसा?।
होते हैं सब विवश, भाग्य जिसका है जैसा।।
अपना है विश्वास, करनी–फल सबको मिले।
ईश्वर है निर्लिप्त, आप ही बुरे या भले।।

## वीरता

रक्षा करना स्वत्व की, होता सबका धर्म।
कोई भिड़े न सबल से, सभी जानते मर्म।।
सभी जानते मर्म, पाय निर्बल सब मारें।
जो होता सहज़ोर, सहित सम्मान पुकारें।।
भिड़ें दुष्ट से वीर, न सोचें जीना–मरना।
बड़े पुण्य का काम, निबल की रक्षा करना।।

# समाज के विलेन

सही बात सुनते नहीं, उनका कौन इलाज?।
गुर्राते, ग़लती करें, हुई कोढ़ में खाज।।
हुई कोढ़ में खाज, न है ग़म कुछ गलती का।
है सर्वोपरि स्वार्थ, न करते काम किसी का।।
समझो इन्हें विलेन, हीरो से डरते नहीं।
जब पड़ती है मार, उसी समय होते सही।।

# काम

थका काम देता अधिक, सीमित करिए काम।
बिना काम सीमित किए, नहीं मिले आराम।।
नहीं मिले आराम, भगा कुविचार दीजिए।
काम जायगा दूर, इष्ट का ध्यान कीजिए।।
यह होती है हवस, न कोई तृप्त हो सका।
ईश्वर का जो भक्त, रहे वह नित्य अनथका।।

## कड़ुए बोल

जो कड़ुआ हैं बोलते, उनके शत्रु अनेक।
उनको क्या चलता पता?, बड़े एक से एक।।
बड़े एक से एक, अंदर–अंदर काटते।
मीठे–मीठे बोल, दीमक से हैं चाटते।।
साफ़ बोलना ठीक, पर नहीं लाठी भाँजो।
बोल कलेजा चीर, बोलते अति मीठा जो।।

## कर्मों का फल

पापी ही अब फल रहे, क्या है इसका मर्म?।
करनी कुछ करते नहीं, उनके संचित कर्म।।
उनके संचित कर्म, सफल होते जो करते।
करें पाप पर पाप, घड़ा पापों का भरते।।
उन्हें न कुछ परवाह, मचाये आपाधापी।
फूटेगा जब घड़ा, तभी चेतेंगे पापी।।

# ईमान

अपना–अपना मानना, अपने तीर–कमान।
सब कुछ चाहे नष्ट हो, बचा रहे ईमान।।
बचा रहे ईमान, प्रेम से सबसे मिलना।
करना सबका भला, स्वाद अमृत का चखना।।
बेचोगे ईमान, ताप में होगा तपना।
क्या लाये थे साथ?, अन्त में कितना अपना?।।

# मतलबी यार

दुनिया में मिलते रहें, बहुत मतलबी यार।
देते हैं धोखा सदा, करते रहते वार।।
करते रहते वार, कष्ट देकर सुख पाते।
करते कभी न त्याग, किसी के काम न आते।।
हैं अच्छे यदि मीत, मार्ग दिखलायें बढ़िया।
भले लोग कम मिलें, स्वार्थियों की यह दुनिया।।

## मित्रता

दिन में रहते साथ वे, देखें नित चलचित्र।
बातें करते रँग-भरी, बने हुए हैं मित्र।।
बने हुए हैं मित्र, काम हो पैर पकड़ते।
मन में ईर्ष्या-द्वेष, कभी हैं .खूब अकड़ते।।
जो हैं अच्छे लोग, न छोड़ें सँग दुर्दिन में।
कैसे हैं ये मित्र?, मिलें ख़ुशियों के दिन में।।

## दुष्ट

कामी, क्रोधी, निर्दयी, लोभी औ' बेशर्म।
कायर, झूठे, स्वारथी, करते हैं दुष्कर्म।।
करते हैं दुष्कर्म, पीठ में छुरा भोंकते।
मिले उन्हें संतोष, हवस में अगर झोंकते।।
ईश्वर देता दंड, साथ मिलती बदनामी।
रहें हमेशा दुखी, व्यक्ति जो क्रोधी–कामी।।

# संघर्ष से उत्कर्ष

रहता जीवन सरस, क्या?, अगर न हो संघर्ष।
जब तक नहीं कठोर श्रम, हो कैसे उत्कर्ष?।।
हो कैसे उत्कर्ष?, विरति में कहाँ मज़ा है?।
बैठें यदि दिन रात, न इससे बड़ी सज़ा है।।
विषम परिस्थिति भले, हिम्मती हाय न करता।
होकर कृतसंकल्प, सत्य पर चलता रहता।।

# महापुरुषों का त्याग

करते हैं तप संत जन, तभी चल रहा देश।
चौराहों पर खड़े हैं, धरे तपस्वी वेश।।
धरे तपस्वी वेश, न छत की इन्हें ज़रूरत।
कपड़े बदले नहीं, नहीं खाने की .फ़ुरसत।।
सबको कहाँ मकान?, खुले में इससे रहते।
सबके हित के लिए, सदा ही ये तप करते।।

## दुष्टों की ताक़त

काम बनाना है कठिन, बिगाड़ना आसान।
इसीलिए तो दुष्ट जन, लगते हैं बलवान।।
लगते हैं बलवान, जानते टाँग खींचना।
उचित समय को देख, स्वार्थ की मूल सींचना।।
वही कहाते वीर, न जाने पीठ दिखाना।
पकड़ सत्य की राह, जानते काम बनाना।।

## परोपकार

जीवन में सब कुछ किया, किया न पर–उपकार।
यही लक्ष्य गंतव्य है, मानव–जीवन–सार।।
मानव–जीवन–सार, फँसे हम मोह–द्रोह में।
कंकड़, पत्थर, ईंट, इन्हीं की रहे टोह में।।
शेष अभी है समय, अगर हम ठानें मन में।
कर लें कुछ उपकार, कमा लें कुछ जीवन में।।

## धर्म की राह

नहीं कभी मिटती हवस, लोभ, नशा औ' काम।
हर सुख में है दुख मिला, लो ईश्वर का नाम।।
लो ईश्वर का नाम, ईश ही हो जाओगे।
होगे प्रभु के पास, वही प्रभुता पाओगे।।
छूटेगी जब देह, छूटेगा सब कुछ यहीं।
चलें धर्म की राह, भटकेंगे किंचित् नहीं।।

## संगति

संगति से गरिमा बढ़े, इतनी, मिले न थाह।
कहीं कुसंगति में फँसे, ढूँढ़े मिले न राह।।
ढूँढ़े मिले न राह, पाप के बनते आदी।
बुद्धि, शांति हो नष्ट, और आती बर्बादी।।
अतः मानिए बात, कभी मत करें कुसंगति।
बच्चे अच्छे बनें, दीजिए अच्छी संगति।।

# उपदेशात्मक

## आँसू

आँसू सबके पोंछ दो, हो जाओ अनुकूल।
बदल जायगी नियति भी, जो भी है प्रतिकूल।।
जो भी है प्रतिकूल, शक्ति से भर जाओगे।
जीवन का जो लक्ष्य, पूर्ण वह कर पाओगे।।
दुर्लभ ऐसे व्यक्ति, अहर्निश उन्हें तलाशूँ।
सच्चे वे इंसान, पोंछते सबके आँसू।।

## वीरता

मद, मत्सर, लालच विकट, काम, क्रोध औ' मोह।
द्वेष, घृणा, संदेह से, होगा केवल द्रोह।।
होगा केवल द्रोह, लक्ष्य इन पर जय पाना।
जो है इनका दास, कष्ट है उसे उठाना।।
जीवन होगा सफल, और ऊँचा होगा क़द।
त्याग दीजिए मोह, द्रोह, लालच, मत्सर, मद।।

## सत्कर्मों की राह

जितना ईश्वर ने दिया, उसमें कर निर्वाह।
अच्छी होती है सदा, सत्कर्मों की राह।।
सत्कर्मों की राह, सदा सुख–दुख हैं आते।
करें ईश का ध्यान, पाश दुख के कट जाते।।
सुख न कुपथ में कहीं, यत्न हम कर लें कितना।
सत्पथ में सुख मिले, उठा लें चाहे जितना।।

## कर्त्तव्य

पूरे करने चाहिए, मानुष को कर्त्तव्य।
सब पंथों का है यही, सीधा सा मन्तव्य।।
सीधा सा मन्तव्य, करो कर्त्तव्य हृदय से।
आती है आवाज़, यही तो नील निलय से।।
मनचाही उपलब्धि, कर्म को धर्म मानिए।
वादे जितने किए, निभाने उन्हें चाहिए।।

## पढ़ाई

पढ़िए पुस्तक ध्यान से, इससे बढ़ता ज्ञान।
मानव–पुस्तक से नहीं, कोई ग्रंथ महान्।।
कोई ग्रन्थ महान्, इसे जो समझ न पाया।
धन–दौलत, पद भले, उसे जग ने ठुकराया।।
जितने मिलते व्यक्ति, बात एक सी न करिए।
कुछ कहने से पूर्व, ख़ूब मानव को पढ़िए।।

## सीख

बोलें कम सोचें अधिक, जो होते विद्वान।
भर जाते संकोच से, उनका हो गुणगान।।
उनका हो गुणगान, खलों को सीख यही है।
सुनना है गुण एक, न इसमें दोष कहीं है।।
करना जीवन सफल, सत्य-पथ पर ही हो लें।
बनना हो विद्वान, अधिक सोचें कम बोलें।।

## कर्मोपासना

नहीं और तप काम–सम, करते रहिए काम।
जीवन का सिद्धान्त दृढ़, है आराम–हराम।।
है आराम–हराम, वस्त्र अपने खुद धोएँ।
करें सफाई सदन, देर तक कभी न सोएँ।।
जीवन में कर्त्तव्य, सदा निभाओ हो कहीं।
माला हरदम जपो, काम बराबर तप नहीं।।

## करनी का फल

अच्छे कामों का तुम्हें, फल देंगे जगदीश।
मानव दे सकता कहाँ?, ख़ुद माँगे बख़्शीश।।
ख़ुद माँगे बख़्शीश, दिखाता नाटक कितने?।
बन जाता मुँह चोर, प्राप्त फल करता जितने।।
नेकी करके भूल, शब्द हैं कितने सच्चे।
रखो न कभी हिसाब, रहोगे हरदम अच्छे।।

## सज्जन

पूजा उनकी मैं करूँ, जिनका हृदय उदार।
सज्जन दुर्जन पर सदा, जो करते उपकार।।
जो करते उपकार, किन्तु खल नहीं सुधरते।
यदि मौक़ा मिल जाय, वार उन पर ही करते।।
खल भी तो हैं मनुज, उन्हें मत समझो दूजा।
पर कुछ भी हो जाय, न करना उनकी पूजा।।

## कर्मफल

मिलता अच्छों को भला, कष्ट किसलिए मित्र?।
दुष्ट कर रहे हैं मज़े, कितनी बात विचित्र।।
कितनी बात विचित्र, भाग्य का खेल जानिए।
संचित पुण्य विशेष, मिले सुख–लाभ मानिए।।
कर्मों से ही जन्म, कर्म–फल घटता, बढ़ता।
सच्चा न्यायी ईश, कर्म–फल सबको मिलता।।

## समझ

नहीं करें कर्त्तव्य पर, माँगे सब अधिकार।
ऐसे को हम क्या कहें?, मूरख या हुशियार।।
मूरख या हुशियार, बड़े भोले ये बनते।
परहित से रह दूर, स्वयं में बहुत उछलते।।
समझें अपना धर्म, समझें यदि जीवन कहीं।
होंगे अच्छे मनुज, पछतावा होगा नहीं।।

## नीच की सेवा

करना सेवा नीच की, देता अतिशय कष्ट।
पुण्य कभी मिलना नहीं, होता समय विनष्ट।।
होता समय विनष्ट, निबल से लाभ उठाते।
साथ लगा परिवार, अन्यथा कुछ कह जाते।।
नीच सदा ही नीच, नीच सँग कभी न रहना।
यह सेवा अपमान, हो सके कभी न करना।।

## छीना–झपटी

दफ़्तर और समाज में, खींच रहे हैं टाँग।
औरों को तँगड़ी लगा, भरते ख़ूब छलाँग।।
भरते ख़ूब छलाँग, ठेलकर आगे जाते।
आता समय ज़रूर, एक दिन नीचे आते।।
मिल जुलकर हम अगर, उठायें सबको ऊपर।
आगे बढ़े समाज, मौज आये घर दफ़्तर।।

## पाप का प्रायश्चित

भूले से यदि कष्ट दें, कर लें पश्चाताप।
पाप न कम होंगे मगर, कम होगा अभिशाप।।
कम होगा अभिशाप, शांति भी कुछ–कुछ होगी।
सुधरेंगे यदि नहीं, बुद्धि भी होगी रोगी।।
सुख में शामिल दुःख, भला क्यों सुख में फूले?।
पर-हित ही है धर्म, कर्म यह कैसे भूले?।।

## बाँटे सब में प्यार

मिलें किसी से यदि कभी, तो मिलिए मुस्काय।
जीवन में चाहे विजय, या कि हार हो जाय।।
या कि हार हो जाय, नहीं हिम्मत हम हारें।
हो सम्मुख शैतान, विजय की युक्ति विचारें।।
मिलने का है मज़ा, मिलते ही चेहरे खिलें।
बाँटे सबमें प्यार, कभी किसी से यदि मिलें।।

## कड़ुई दवा

कड़ुए से क्यों भागते?, कड़ुआ गुण की खान।
समझ–समझ का फेर है, कड़ुआ सिर्फ़ निदान।।
कड़ुआ सिर्फ़ निदान, करेले औषधि कहते।
होती अमृत नीम, कीट मीठे में पड़ते।।
क्या यह अच्छी बात?, बने क्यों लगुए–भगुए?।
स्थिर रहते सम्बन्ध, मित्र! तुम होते कड़ुए।।

## उन्मादी

उन्मादी होता बुरा, काम, क्रोध लवलीन।
ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, कपट, शांति तुरत लें छीन।।
शांति तुरत लें छीन, साथ बेचैनी देते।
बल, पौरुष, उत्साह, बुद्धि, संयम हर लेते।।
संचित धन–यश नष्ट, तुरत होती बरबादी।
अति वर्जित सर्वत्र, न हों किंचित् उन्मादी।।

## आलस

आलस ही सब गुणों को, कर देता है नष्ट।
बिना निरंतर यत्न के, दूर न होते कष्ट।।
दूर न होते कष्ट, गीत ईश्वर के गाओ।
जीवन होगा सफल, कर्म को धर्म बनाओ।।
सब ईश्वर के हाथ, पूर्णिमा हो कि अमावस।
करना यदि कुछ तुम्हें, त्याग दो सारा आलस।।

# गृहस्थाश्रम

खोलो आँखें भीतरी, पत्नी है कमनीय।
पूरा उसको प्यार दें, सफ़र बने रमणीय।।
सफर बने रमणीय, आचरण बहुत ज़रूरी।
बाक़ी हो यदि कमी, उसी से होती पूरी।।
श्रेष्ठ गृहस्थी धर्म, कर्म अच्छे मृदु बोलो।
स्वर्ग उतर आ जाय, भीतरी आँखें खोलो।।

# औरत

औरत से घबड़ाइये, मत करिए अपमान।
मान नहीं रह पायगा, उचित नहीं अभिमान।।
उचित नहीं अभिमान, ईश ही करे नियंत्रण।
पर नारी को देख, न मोहित हों. लें यह प्रण।।
लक्ष्मी का प्रतिरूप, न इससे बढ़कर दौलत।
चंडी, काली रूप, बहुत ताक़तवर औरत।।

# आध्यात्मिक

## मेरे भगवन

मेरे भगवन हो कहाँ?, मिलता मुझे न चैन।
बाट तुम्हारी जोहता, खोले मूँदे नैन।।
खोले मूँदे नैन, बहुत तड़पाते रहते।
मुझे रखा क्यों दूर?, विकल हूँ सहते–सहते।।
मुझको दिया न ज्ञान, मुझे है माया घेरे।
शीघ्र बुलाओ पास, प्राण प्रिय भगवन मेरे।।

## प्रार्थना

इतना दुख मत दीजिए, जिससे जायें टूट।
हम निर्बल असहाय हैं, हमें चाहिए छूट।।
हमें चाहिए छूट, युक्ति से मुक्ति न मिलती।
बिना ईश की कृपा, भक्ति की कली न खिलती।।
बड़ी समस्या कठिन, भला कैसे हो अपना?।
प्रभु! दे दो सद्बुद्धि, माँगता मैं बस इतना।।

## होता वह प्रतिकूल

सब कुछ करते इसलिए, सब कुछ हो अनुकूल।
ईश्वर को जब भूलते, होता तब प्रतिकूल।।
होता तब प्रतिकूल, सदा ही दुख में रहता।
आते विघ्न अनेक, कष्ट कितने ही सहता।।
द्रुति गति की कामना, लिटाता वह खटिया तब।
हिल मिल रहें समोद, बदल बनते दुश्मन सब।।

## पाप–पुण्य थर्मामीटर

मेरे भगवन दो मुझे, थर्मामीटर दान।
पाप–पुण्य की नाप लूँ, कर दो कृपा महान्।।
कर दो कृपा महान्, ज्ञान की आँखें खोलूँ।
जो पीड़ित कमज़ोर, पक्ष में उनके हो लूँ।।
कलियुग का है युद्ध, सहारे मैं हूँ तेरे।
मैं हूँ शक्ति-विहीन, एक बल तुम ही मेरे।।

## प्रभु के प्रिय

धरती जिन्हें न पूछती, प्रभु करते हैं प्यार।
आशा पर वे जी रहे, सहते कष्ट अपार।।
सहते कष्ट अपार, न छीना–झपटी करते।
ईश्वर पर विश्वास, नहीं दुष्टों से डरते।।
अच्छे करना कर्म, अमर है आत्मा रहती।
वहाँ मिलेगा भाग, मिला जो अभी न धरती।।

## ईश्वर की स्मृति

मैं हूँ आज सुखी बहुत, इसमें है कुछ राज़।
मुझको तो ऐसा लगे, तू मुझसे नाराज़।।
तू मुझसे नाराज़, मुझे है भूल गया तू।
मैं भी हूँ मदमस्त, शरण दे दिखा दया तू।।
सुख दे करता दूर, अतः करुणा माँगूँ मैं।
फिर दे दे दुख मुझे, न ऐसा सुख चाहूँ मैं।।

## ईश्वर की कृपा

कितनी अच्छी बात है, मैं हूँ आज ग़रीब।
जब–जब होता हूँ दुखी, पाता तुम्हें क़रीब।।
पाता तुम्हें क़रीब, सौख्य में याद न आते।
धन की बढ़ती हवस, और हम पाप कमाते।।
धन संपति हो पास, ज़रूरत पड़ती जितनी।
हरि इच्छा हो काम, करो कोशिश तुम कितनी।।

## ईश–भक्त

ईश्वर को जो मानते, करते नहीं अनीति।
घर, दफ़्तर, व्यापार में, चलें सही ही नीति।।
चलें सही ही नीति, न आपाधापी करते।
करते हरदम न्याय, नहीं दुष्टों से डरते।।
कर्मों में विश्वास, मानते प्रभु के स्वर को।
चित्त–वृत्ति रख शुद्ध, झुकाते सिर ईश्वर को।।

## जीवन का समीकरण

जीवन एक समीकरण, भाग्य और फल, कर्म।
मानव कैसे हल करे?, जान न पाया मर्म।।
जान न पाया मर्म, नियन्ता व्याप्त या नहीं।
क्या होता परलोक?, जगत में या अन्य कहीं।।
भटक रहा है जीव, इसलिए होती तड़पन।
हल न कर सके लोग, बिताये कितने जीवन।।

## सुबह की शुरुआत

साँझ–सवेरे बैठ कर, पढ़ते स्वारथ–पाठ।
राम–नाम सुनकर उन्हें, मार जाय ज्यों काठ।।
मार जाय ज्यों काठ, न करते संग, संत का।
कभी न सोचें लोग, सत्य ही सत्य, अंत का।।
भौतिकता पर झुके, मिलेंगे खल बहुतेरे।
कभी नहीं परमार्थ, सोचते साँझ–सवेरे।।

## असार संसार

बड़ी मीन का भोज्य लघु, मीन–मीन आहार।
प्रकृतिदत्त सिद्धान्त यह, जग का भी व्यवहार।।
जग का भी व्यवहार, व्यवस्था ईश्वर की है।
माया के वश विश्व, जीव की नियति यही है।।
यह संसार असार, हाथ में पड़ी हथकड़ी।
होनी आत्मा मुक्त, समस्या यही है बड़ी।।

## पतंग

जीवन बना पतंग सा, डोर दूसरे हाथ।
रंग–रूप कितने अलग, नहीं किसी का साथ।।
नहीं किसी का साथ, बात उड़–उड़ कर करती।
रोती पाकर ढील, डोर के साथ अकड़ती।।
मानव अंग पतंग, नियति इसकी है नर्तन।
गर्व न किंचित् उचित, न अपना, अपना जीवन।।

## पूर्णता

दुनिया के सब आदमी, चीजें सभी अपूर्ण।
दुनिया में सब दौड़ते, बनने को ही पूर्ण।।
बनने को ही पूर्ण, क्षेत्र विज्ञान, कला हो।
या फिर दर्शन, धर्म, द्रव्य, यश का मसला हो।।
लेकर सत्संकल्प, चले बिरला ही गुनिया।
कर्मों का ही भोग, भोगती है यह दुनिया।।

## पूजा

पूजा में एकाग्रता, नहीं कीजिए भंग।
पूजा जिसकी कर रहे, होते उसके संग।।
होते उसके संग, बनें उसके जैसे ही।
शुरू करें जब काज, नाम ले लें वैसे ही।।
कोई भी हो पन्थ, धर्म है अन्य न दूजा।
पाओगे सब पुण्य, कर्म ही सच्ची पूजा।।
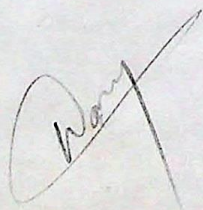
## मन की वृत्ति

मनसा, वाचा, कर्मणा, जिधर तुम्हारा ध्यान।
पाप–पुण्य सबसे मिले, मिले मान–अपमान।।
मिले मान–अपमान, व्यर्थ, जब दुखी हृदय हो।
शांति–हर्ष हो व्यक्त, अगर सुख का संचय हो।।
शीशा धुँधला, वक्र, हृदय बिलकुल शीशे सा।
वैसा ही फल मिले, करे जैसी वह मनसा।।

## डेलीवेज़ कर्मी

कर्मी नैमित्तिक सभी, करो काम सब सोच।
निष्ठा से सेवा करो, आये भले खरोंच।।
आये भले खरोंच, नहीं क्यों सीधे रहते?।
है सामाँ सौ बरस, ख़बर क्या कल की रखते?।।
ठीक नहीं है अहम्, छोड़ दो यह हठधर्मी।
स्थायी कोई नहीं, सभी नैमित्तिक कर्मी।।

# हमारी अन्य श्रेष्ठ काव्य-कृतियाँ